

॥ श्रीः ॥

देवी भजन मुक्तावली

(भजनों का एक अपूर्व ग्रंथ)

गोलोक वासी

श्रीकाशीप्रसाद विरचित ।

जिस

काशी निवासी—

बाबू चंद्रिकाप्रसाद श्रीवास्तव ने

प्रकाशित किया ।

सम्पूर्ण अधिकार प्रकाशक ने स्वार्थ

मैनेजर पं० आत्माराम शर्मा द्वारा
जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स, कालभैरव काशी में मुद्रित हुई ।

प्रथमवार १०००]

१९१८

[मूल्य ॥)

SPS

158 S 16 A



15404

1288+

K13D

Ranvir

समर्पण ।

श्रीकमला के अति कृपहि, सन्मुख आयो आज ।
 देवी भजन मुक्तावली, लिये करन मो साज ॥१॥
 हे भक्तन समुदाय मम, करौ दण्डवत तोहि ।
 ग्रंथ लिये मैं ठाढ़ हूं, तेरे सन्मुख सोहि ॥२॥
 हे हे कमला भक्त हे, कृपा धारि उर माहि ।
 देवि भजन मुक्तावली, करौं समर्पित तोहि ॥३॥
 आशा जन स्वीकृत करहि, देहि वड़ाई मान ।
 दोष न गनिहैं भक्त जन, देवि भजन यहि जान ॥४॥

शुद्धाशुद्ध पत्र ।

अशुद्ध	शुद्ध	पत्र	पंक्ति
दोव	देवी	३	७
विस्तणि	विस्तरणि	६	८
मोकद	मोदक	७	८
साजरे	सजरे	१३	१०
मुनि	सुनि	१५	६
जाइ	जाई	१७	१२
क्यों	क्यों	२०	९
त्रिभुन	त्रिभुवन	२१	४
रकसुर	रंकसुर	२२	१०
सुरात	सुराते	२३	१०
दवी	देवी	"	११
विनै	विनय	२५	"
ज	जे	२७	६
सुधमृत	सुधामृत	"	७
भज	भजे	"	११
पदुम्म	पदुम	"	१४
बूडन	बूडन की	३५	१
पंचाम्रित	पंचामृत	३७	८
गागारी	गागरी	४१	"
पगारी	पागरी	४४	४
टाढ़े	टाढ़े	"	४

(२)

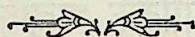
अशुद्ध	शुद्ध	पत्र	पंक्ती
गंधरव	गंधर्व	४५	३
भाख	भाल	४६	८
हुरमा	रमा	४७	१०
स्वाममि	स्वामिनी	"	१४
जलक	अलक	४८	१२
सुधूंघर	सुधूंघर	"	१३
खिष्टि	सृष्टि	५३	१०
हरि	हारे	"	१३
भैरी	भयरी	५५	२
रामा	रमा	५६	११
केहि	कहिं	५७	"
भजन को	भजन देवी को	६५	१
अवरि	अव कि	६६	३
सजम	संजम	६७	५
इह	इहै	"	६
जो सुनिमेष	निमेष	"	९
रितु	ऋतु	६८	१०
नसावनि	नसावति	६९	१५
कजल	कजल	७०	१२
उहरिया	डहरिया	७२	३
घरणाई	नरणाई	७४	१५
चरणन का	चरणन को	७५	१६
रितु	ऋतु	७७	१
त्रिपुड	त्रिपुंड	७८	५
कौशिल	कौशिल	८२	१४

(३)

अष्टुद्ध	शुद्ध	पत्र	पंक्ती
वनि	चितवनि	८८	६
टीका	टीको	६०	४
झवारि	गिझवारि	६४	६
उहरते	उहर	९५	५
उधारिनी	उधारिनी	"	८
हमारी	हमारो	९६	१
रागी	रासी	१०२	१
गवानाही	गंवाना नहीं	१०५	१६
वेसुमार	वे शुमार	१०६	५
शव	सव	१२०	१
निकंदन	निकंदनि	१२१	१
छोर	क्षोर	१२२	११
अष	भव	१२४	९
सिन्धु	सिन्धु	"	"
तै	ते	१२६	७
विभातस	विभात	१२७	१४
नाल	सनाल	"	"
दिढ़ाई	दढ़ाई	१३१	९
ह	हे	१३३	५
चितै	चित	१३७	१२
सेउ	सेवै	१३९	५
जोहि	जाहि	१४३	७
मिन्न गुन	भिन्न गुन	१५०	१३

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीकमलाजीकी आरती ।



जै कमले हरिललने जै त्रिभुवन जननी
 जै जै त्रिभुवन जननी जै जै सुरमुनिपालिनि
 जै संकट हरनी जै देवि जै देवि १ जै जग-
 कारनि माये सगुणे गुण रहिते जै सगुणे गुण
 रहिते जै बैकुण्ठ विहारिणि नारायण सहिते जै
 जै देवि जै देवि २ जै मणिद्वीप विलासिनि जै
 महिमा अमिते जै जै महिमा अमिते हरिहृत्क-
 मल विकाशिनि विधि शंकर नमिते जै देवि
 जै देवि ३ श्री कमला शिर मुकुट विराजित
 नाशापुट मोती श्री नाशापुट मोती कोटि वालर
 वि दिपित मनहुँ श्री मुख जोती जै देवि जै
 देवि ४ रमा जुगल कर कमल विराजत अति सुन्दर
 विराजित अति सुन्दर ललित सरोरुह युगल अभ-

यवर जन सुखकर जै देवि जै देवि ५ शिव ब्रह्मा-
 दिक मिलि सुर गण अस्तुति गावैं अस्तुति गावैं
 आरति करति उमादिक अतुलित छवि पावैं जै
 देवि जै देवि ६ चारिहुँ वेद चहुँ दिशि श्री महिमा
 वरनै भगवती महिमा वरनै इन्द्रादिक सुरमुनि
 गन से-वहि जुग चरनैं जै देवि जै देवि ॥७॥
 जासु कृपालहि मुक्ति सकल जीवन काशी
 आरति गावउँ तासु ब्रह्म जो अविनाशी जै देवि
 जै देवि ॥८॥१॥

श्री भुवनेश्वरी महारानी की आरती ।

जै मणि दीप निवासिनि जै भुवनेशानी
 जै जै सुरनर पालनि जै जै रुद्रानी जै देवि
 जै देवि १ जै पाशांकुश धारिनी अभिमत वर-
 दानी जै अभिमत वरदानी जै जै भव भय
 हरनी जै जै महारानी जै देवि जै देवि २ अरुण
 कमल छवि सोहत मुख पंकज जोती श्री मुख

पंकज जोती मणि भूषन अंग राजित नाशा
 पुट मोती जै देवि जै देवि ॥ ३ ॥ मणि मंडप
 मधि स्तन सिंघासन अतिसुन्दर सिंघासन अति
 सुन्दर शिवाकार बरमंच विराजत जन सुखकर
 जै देवि जै देवि ॥ ४ ॥ पाद जासु विधि हरि
 हर अरु ईश्वर विधि हरिहर अरु ईश्वर फलक
 सदा शिव बने आपुताके ऊपर जै देवि जै
 देवि ॥ ५ ॥ तासु मंच पर बैठी भगवति भुव-
 नेशी श्री भगवति भुवनेशी आरति करति विबु-
 ध तिय शारद देवेशी जै देवि जै देवि ॥ ६ ॥
 जै जै भक्त उधारिनि देवी गुनगशी जगदम्बा
 गुणगशी ॥ मांगत श्री पद भक्ति चरन सेवक
 काशी जै देवि जै देवि ॥ ७ ॥ २॥

रागकान्हरा ॥ १ ॥

भगवति चरन भजो मेरे भाई ॥ १ ॥
 सुन्दर ललित बरन पंकज छबि नख जो-तिन

रविकोटि लजाई ॥ २ ॥ ऊरध रेख कुलिश धुज
 अंकुश अमल कमल जव परम सुहाई ॥ ३ ॥
 ब्रह्मादिक सेवित चरनन की महिमा अमित
 बरनि नहि जाई ॥ ४ ॥ विबुध मुकुट माणि
 गण प्रतिविंवित श्रीपद दुति अतुलित
 अधिकाई ॥ ५ ॥ इन्द्रादिक सुर भजि जा पद
 को पाये निज पद वर प्रभुताई ॥ ६ ॥ सुरथ
 भूप आराधि जाहि रिपु जी-तिलाई निजराज
 बढाई ॥ ७ ॥ जो पद पदुम भजन प्रताप लाहि
 वैश्य समाधि ज्ञान निपुनाई ॥ ८ ॥ पाइ
 परम गति मंगल भूपति तिहूंलोक कीरतिहि
 बढाई ॥ ९ ॥ भुक्ति मुक्ति धन धाम राज सुत
 धरम परम यश भूति भलाई ॥ १० ॥ अभिमत
 फल पावे नर निति भजि जननि चरन संतन
 सुखदाई ॥ ११ ॥ हरिहर विधि रवि सुर गनना
 एक पूजि अनेक जनम सिधिपाई ॥ १२ ॥

काशी भजिये भगवती पद पंकज जाहि सकल
सुर सीस नवाई ॥१३॥३॥

रागमल्लार ॥१॥

मेरे मन देवि मूरति वसी ॥ १ ॥ सुमिरि
रूप अनूप जाको अविद्या तम नसी ॥ २ ॥
सीस माणिक मुकुट राजित उर वसी ॥ ३ ॥
श्रवन मणितटंक सोहत भालवैदी लसी ॥४॥
जुगल पग मंजीर शोभित किंकिनी कटि कसी
॥ ५ ॥ यश बखानत सकल मुनिगन सहस
आठ अरु असी ॥ ६ ॥ ध्यान शंकर करत
जाको सेइ वारानसी ॥ ७ ॥ मेनका करि नृत्य
गावत अप्सरा उरवसी ॥ ८ ॥ कोउ चहत बर
धाम धन कोउ होन चाहत यशी ॥ ९ ॥ चहत
कमला भक्ति काशी सेइ वारानसी ॥१०॥४॥

रागकेदारा ।

भजुमन देवि भव भय हरणि ॥ १ ॥

कोटि चन्द्र समान शीतल प्रभा अति सुख
 करणि ॥ २ ॥ जोति अंग विभाति अद्भुत
 मनहु कोटिन तरणि ॥ ३ ॥ आदि शक्ति
 प्रताप अतुलित को सकै तिहि वरणि ॥ ४ ॥
 जासु पदरज जानि महिमा हरि लिये शिर
 धरणि ॥ ५ ॥ जयति छीर समुद्र तनया जयति
 माधव घरणि ॥ ६ ॥ भक्त केहित धारि बपु लीला
 ललित विस्तरणि ॥ जयति जयति त्रिदेव जननी
 जयति उतपति करणि ॥ जयति जग पालनि
 भवानी जयति जग संघरणि ॥ शंख चक्र गदा
 सहित कर कमल पंकज धरणि ॥ देहु निज पद
 भक्ति काशिहि पाहि अशरण शरणि ॥ ५ ॥

राग कान्हरा ।

ध्यान करो गनपति जननी को ॥ दा-
 मिनि दुतितन तेज विराजत बसन ललित
 भूषन सुठिनीको ॥ अरध चन्द्र चूडामणि

सोहत भाल विशाल जटित मणि टीको ॥ वेसर
 लसत नासिका सुन्दर मुख छवि लखि पूरन
 शशि फीको ॥ अधर विंव विद्रुम दुति शोभित
 दशन हसत जनु कुन्द कली को ॥ कनक
 लता समगात मनोहर उपमा कहि न जात
 त्रिवलीको ॥ मुक्ताहार नाभि सर राजित
 लज्जित करत हंस अवली को ॥ मातु गोद
 गज बदन विराजत जननी खवावत मोकद
 घी को ॥ छवि निधान शिव श्वेत जलद निभ
 सँग सोहत गिरिशज लली को ॥ जोरी अभि-
 मत फलदा सुरतरु काशी के हिय धाम थली
 को ॥ निरखि वारि तन मन वा छवि पर भजहु
 सदा शिव पारवती को ॥६॥

रागकान्हरा ॥

सेइये कमला पद पंकज ॥ जासु पदार
 विन्द निशि वासर ध्यावत सुरपाति विधि शंकर

अज ॥ जाके भाल लिखीलिपि विधि की परम
 दरिद्र लखो यह अचरज ॥ भजि कमला पद
 भयेउ भूप मणि लहेउ सैन्य वाजिनरथगज ॥
 ध्यान किये श्री चरनरेख शुभ अंकुश कमल
 कुलिश ऊरध ध्वज ॥ नाशत सकल पाप ताप
 दुख होत परम मंगल वधाव वज ॥ योगी साधि
 सकल इन्द्रिन को ध्यान करतहिय जो पद
 अंबुज ॥ काशी त्यागि सकल जंजालहि अभिमत
 फल दायक श्री पद भज ॥७॥

राग केदारा ।

करु मन अम्बिका पद ध्यान ॥ प्रात जो
 पद पदुम ध्यावत जन लहत कल्याण ॥ परम
 शुभ दायक सुरासुर सेव्य रूप निधान ॥ जाहि
 चरन सरोज छवि ब्रह्मादिदेव प्रधान ॥ भजत
 अति अनुराग निशि दिन चंचरीक समान ॥
 अरुण वरण हरण सकल दुख दीनता अज्ञान ॥ सेइ

ब्रह्मा नन्द रसको लहत संत सुजान ॥ उरध
 रेख सुकमल धुज अंकुश कुलिश सुखखान ॥
 मिटत सुमिरत मूढता तम फुरत हिय विज्ञान ॥
 विनय काशी करत जननी देहु यह वरदान ॥
 वसै तब पद भक्ति मोहिय होय निर्मल
 ज्ञान ॥८॥

करु मन अम्बिका पद प्रीति ॥ इन्द्रियन
 के विषय पागो तजि भजन की रीति ॥ अंत
 को पछताइ है जब आयु जैहै वीति ॥ जगत
 रचना चारि दिन को बालु की जनु भीति ॥
 ताहि लखि मति भूल प्यारे मानिकै परतीति ॥
 शरण गहि जगदंब को तब छूटि है भवभीति ॥
 आदि शक्ति सरोज पद भजु त्यागि सकल
 अजीति ॥ पाइहै निर्वाण काशी सेइ परम
 पुनीति ॥९॥

करु मन अम्बिका पद प्रेम ॥ जाहि सुर

मुनि भजत अनुदिन गहि अचल दृढ़ नेम ॥
 जोति रूप अनूप हिय में मनहुँ दीपक टेम ॥
 जोगि ध्यान लगाइ देखत लहहिं परम सुखेम ॥
 दिपित जासु स्वरूप सुंदर मनहु तपित सुहेम ॥
 भजत काशी जाहि शंकर धारि अविचल
 नेम ॥१०॥

राम केदारा ।

शोभित रमा रमा पति जोरी ॥ दहिने
 हरि तन श्याम जलद छवि वामरमा दामिनि
 दुति गोरी ॥ जलधि सुतातन कनक बसन
 सुठि श्री पति ओढे पीत पिछेरी । नारायण
 शिर मुकुट जडित मणि रमा सीस चन्द्रिका
 लसोरी ॥ हरि उर वन माला की शोभा
 कमला उर उर वसी वसौरी ॥ केशर खौरि
 लसत माधव शिर लछ्मि भीम भाल सिंदूर दियोरी
 कुंडल मकर कृत हरि कानन करन फूल श्रुति

सिन्धु किशोरी ॥ युगल किशोर रूप छवि
 बरनत शारद नारद मति भइ भोरी ॥ वेद पुरान
 बखानत थाके महिमा वरनि सकै कवि कोरी ॥
 दंपति मुख छवि नैन विलोकत पूरन शशि
 जनु जुगल चकोरी ॥ काशी प्रसाद पाइ शुभ
 अवसर चरन भक्ति वर मांगि लियो री ॥११॥

रागसारंग ।

सजनी यह गिरि कुवरि अहैरी ॥ लखि
 दारुन तप अचल मुताकर बन किरात तिय
 सकल कहैरी ॥ इनहिं प्रनाम करहिं सुर मुनिवर
 जग जननी चहुँ बेद कहैरी ॥ शिव विवाहहित
 गहेउ कठिन ब्रत तजि अहार दुख दुसह सहैरी
 जाहि सदा योगी हिय ध्यावत नाम लेत गति
 जीव लहैरी ॥ सो मुस्कज हेतु जन पालिनि
 निराहार दिन रैन रहैरी ॥ सखिमें सांच कहति
 मुनि मुनि ते चलि गौरी पद कमल गहैरी ॥

कंद मूल फल फूल भेट धरि अभिमत फल
को आजु लहैरी ॥ धन यह भूमि परम पावनि
शुचि जगदम्बा जहँ आपु रहैरी ॥ काशी सब
सुर मुनि सेवत पद भजि भगवति शुभ भक्ति
चहैरी ॥१२॥

राग

त्रिभुवन जननी के वलिजैहों ॥ अब श्री
कमला पद पंकज कहँ तजि न कहूँ चलि जैहों
अभिमत फल आराधे औरहि श्री पद विमुख
न पैहों ॥ मन अति चंचल चपल ताहि अब
देवी भजन सिखैहों ॥ अपर कथा कानन
नहिँ सुनिहों और नाम नाहिँ लैहों ॥ नैन
निखि जगदम्बा मुख छवि मातुहि सीस
नवैहों ॥ अपर त्यागि सब प्रीति जगत की मा
पद नेह लगैहों ॥ काशी सकल चराचर जननी
ताको मैं दास कहैहों ॥१३॥

राग

हे मन जगदम्बा पद भजरे ॥ जाहि
 भजे उत्तम गति पावत नर अंडज उष मजरे ॥
 ब्रह्मा विरचत सकल जगत को पाइ जासु पद
 रजरे ॥ पाइ मनुज तन वृथा न खोंवै आलस
 कहँ अब सजरे ॥ अर्थादिक चारिहु फल दाता
 देवी चरण पंकजरे ॥ ताहि विसारि विषय
 लपटाने जो सेवत शिव अजरे ॥ अरुण कमल
 छवि तरुण तरुणि दुति लसत कमल जब
 ध्वजरे ॥ काशी सेइ भजिये कमला पद भक्ति
 साजको साजरे ॥१४॥

राग

भजहु चरण श्री जग जननी को वीतत
 काल वृथा मेरे प्यारे ॥ तजि सब विषय विहार
 कुटिलता मानि परम हित बचन हमार ॥
 अपनी रहनि विचारु हिये महुँ काहे जननी

पद पदुम विसारे ॥ जगदम्बा त्रिभुवन की
 माता ताहि भजो निति सांभ सकारे ॥ जापदर-
 जलहि जग विश्वत अज धरणी शेष सहस
 शिर धारे ॥ प्रलय काल शिव अंग लगावत
 भस्म वनाय जगत कों सारे ॥ नहिं गति देवी
 चरन भजन विनु वेद शास्त्र मुनि गुनि निखारे ॥
 काशी प्रसाद भजत निशि वासर पाहि मातु
 में शरण तिहारे ॥१५॥

राग

जग की जननी भव भय हरनी विनती
 इतनी सुनिये मेरी ॥ सब संकठ ताप हरो मेरो
 करिये करुणा तजिये देरी ॥ मन मेरो मतंग
 नहि मानै ममता मद माति रह्यो एरी ॥ अंकुश
 धर सवरेपाय जुगल कवताहि स्ववश करिहैं
 घेरी ॥ सुनि श्रवन सुयश शरणागत को
 शरन-नमैआई पडेऊँ तेरी ॥ जननी को

सुभाव विदित जग में सुत को अपराध नहीं
हेरी ॥ माया मोहि अतिहि सताय रही जा
को नाम अविद्या लुव बेरी ॥ काशी परसाद
पुकार करै काटिये जननी माया बेरी ॥१६॥

श्रीकमलाहरि प्रिया जी के जनम की
बधाई ॥ मंगल ॥ मुनि कमलाजी को जनम
जगत आनंद भयो ॥ अखिल चतुर्दश भुवन
परम मंगल ह्यो ॥ धनि वह कार्तिक माँस
शरद शोभालसी धनि उजियारो पाख धन्य
वहद्वादसी ॥ अरुणोदय के समय प्रगट भई
मातु जब ॥ हरखि विबुध गन कनक सुमन
भरि लायउ तब ॥ मिलि सुर वनिता वृन्द सुमँ-
गल गावहीं ॥ जनम सुफल निज लखि परम
सुख पावही अरुण कमल आसीन रमा छवि
सोहई ॥ सुरभुनि असुर चराचर कर मन मोहई
चारि भुजा युगकमल अभय वर सुंदर, अमृत

कलश गहि चारि अन्हवावत करिवर ॥ रतन
 जड़ित शिर मुकुट प्रभा अति भावई ॥ श्रवन
 युगल ताटक अमित छवि पावई ॥ नासावेसर
 ललित भाल वैदीलसी ॥ चूरी सुभग चहूं कर
 कठि किंकिनकसी ॥ लखि मुख कमल प्रकाश
 कोटि रवि लाजई ॥ नृत्य करत गंधर्व अपछ-
 रागावहीं ॥ परम मुदित दुंदुभी सुरेश बजावहीं
 परमानंद मगन नारायण मनहिमन ॥ रूप
 अनूप निहार वारि तन आपन ॥ जयजय धुनि
 सुर असुर समाज उचारहीं ॥ उमा सची बानी
 आरती उतारहीं ॥ सिंधुराय अति हरखनिछा-
 वर बांठहीं ॥ दैमनि भूषन रतन जगत को पाटहीं
 नाचत सहित समाज महेश हरष भरे ॥ सोहत
 परम विचित्र हाथ डमरू धरे ॥ पढ़ि श्रीसूक्ति
 पवित्र वेद अस्तुति करे ॥ जाहि पढे दुख मि-
 टत सकल पातक हौं ॥ काशी जो यह मंगल

(१७)

हरखित गावहीं ॥ इच्छा फल जगजननि कृपा
सब पावहीं ॥ १७ ॥

पुनःजनम मंगल श्रीहरि बलभाजीको राग ।

आजु श्री सिन्धुराज गृह मंगल बजत
वधाई ॥ आखिल चराचर त्रिभुवन स्वामिनि आपु
प्रगटि जह आई ॥ गावत मंगल सुरवनिता
सब कमला जनम वधाई ॥ नृत्य करत गंधर्व
अपछरा सुदित परमहरखाई ॥ सिंधु राज आ-
नंद उमंगि मन नाना रतन लुटाई ॥ परमा-नन्द
धाइ सुरलूटत देह दसा विसराई ॥ हरखि देव
दुंदुभी वजावत गगन सुमन भरिलाई ॥ सुजस
वखानत वेद चहु दिसि जैजै कार मचाई ॥ कम-
लासनी सिंधु तनया को रूप वरनि नहि जाइ ॥
प्रभा कोटि शशि तेज कोटिरवि काम कोटिछवि
छाई ॥ अमल कमल कर जुगल विराजत जुग
वर अभय मुहाई ॥ चारि भुजा चारिहु फलदाता

(१८)

भक्तन के सुखदाई ॥ चारि कोन चारि गज
सुन्दर अमृत कलश-अन्ह वाई ॥ हरि निजव
च्छस्थल मंह धारे हरि वल्ल-भाकहाई ॥ काशि
प्रसाद रमाचरनन भजि भक्ति विमलवर पाई ॥१८॥

पुनः श्री सिन्धु किशोरी कमला

जनम वधाई राग कान्हरा ॥

जनम लियो श्री आदि भवानी ॥ मथन होत
ही छीर सिन्धु के प्रगट भई कमला महरानी ॥
पद्मासन बैठी सुटि सुन्दरि रूप राशि शोभा
गुण खानी ॥ आरति करति सकल सुर दानिता
उमा सची धनदा ब्रह्मानी ॥ हरषि विबुध दुंदु-
भी बजावत कहत सकल जै हरि पटरानी ॥
सुरपति फूलन की झरलाई अस्तुति करत वेद
वरवानी ॥ सिन्धु-राय गज वाजि रतन सब हरषि
लुटावत मंगल ठानी ॥ चार भुजा युग कमल
अभय वरछवि अपार नहिं जात वखानी ॥

परम हरष हरि रमा रूप लखि जीवन जनम
 सफल करि मानो ॥ तुरित धनद निज इष्ट
 देवि लखि रतन जडित भूषन सब आनी ॥
 पाहिरावत हरिप्रेम विवश है लखि मोहित भग-
 वति मुसुकानी ॥ आदि जोति ब्रह्मादिक जननी
 भक्ति हेतु हरि हाथ विकानी ॥ कियो धाम
 हरिवल्लभ्यल मंह जा कह ध्यान करहिं मुनिज्ञानी ॥
 जगदम्बा की अतुलित महिमा अन्तन विधिहरि
 शंकर जानी ॥ काशि प्रसाद आश करु पूरन
 विनती करत जोरि जुग पानी ॥१६॥

रागा

मेरी मति देवि भजन की प्यासी ॥ सुरपति
 हरि हर धनद चतुरमुख सब सुर शक्ति उपासी ॥
 मायाधीन चराचर जेते देवि तुही अविनासी ॥
 सोरे जगत को मोहि लइ है माया जो है
 तेरी दासी सुरनर मुनि सब माया के बस जोगी

(२०)

जती सन्यासी ॥ उलठो जग वेवहार देखि कै
 आवत है मोहि हांसी ॥ मायेश्वरि पद भजन
 विनानर कैसे छुटैभव फांसी ॥ माया स्वामिनि
 त्रिभुवन जननी सकल जगत उर वासी ॥ श्री
 पद विमुख नहीं उत्तमगति क्या मथुरा क्या
 कासी ॥२०॥

राग ।

जननि पद काहेन भजन करो ॥ वेद पुरा-
 न बतावत बहु विधि तुम नहिं ध्यान धरो ॥
 देवि भजन बिनु मुक्ति न पैहो क्यों भव बन्ध
 परो ॥ जबगुरदेव ज्ञान अंजन दियो क्यों भव
 कूप गिरो ॥ जनम लहेउ तुम लख चौरासी
 अबहु न पेट भरो ॥ जीवन मुक्त देवि पद शे-
 वक ताहि सदा सुमिरो ॥ काशि प्रसाद भजो
 कमला पद ताहिनि अब विसरो ॥२१॥

दिवाने मन क्या जग भरमिरहे ॥ जग-

दवा को सुमिरन तजि के क्यों दुखदुसह सहे ॥
 सिन्धुसुता पद नावत्यागि के क्यों भव सिन्धु वहे
 वेद पुगन वखानत महिमा मुनि गन सकल
 कहे ॥ त्रिभुन स्वामिनिचरन भजन विनु
 कोउ न मुक्ति लहे ॥ भगवति भजन सुधा
 रस चाखे तापन कोई रहे श्रीकमलापद पदुम-
 भक्ति विनु काशीन और चहे ॥ २२ ॥

देविपद काहे न प्रीति किये ॥ त्याग भग-
 वति भक्ति सुधामृत मदिरा काहे को पिये ॥
 जिह्वा के वश जीव वधत है दायान तनिक
 हिये ॥ स्वाद विवस खल सुनत नहीं कछु
 क्या तुम सों कहिये ॥ जो जग जननी भक्ति
 चहो तुम हिंसा अवसि तजिये ॥ दया धरम
 गहि भगवति के पद भजन सदा करिये ॥ विष-
 इन के उपदेश अहित अतिताहि नही सुनिये
 जे नर अधम विमुख जननी पदते जग काहे

जती सन्यासी ॥ उलठे जग वेवहार देखि कै
 आवत है मोहि हांसी ॥ मायेश्वरि पद भजन
 विनानर कैसे छुटैभव फांसी ॥ माथा स्वामिनि
 त्रिभुवन जननी सकल जगत उर वासी ॥ श्री
 पद विमुख नहीं उत्तमगति क्या मथुरा क्या
 कासी ॥२०॥

राग ।

जननि पद काहेन भजन करो ॥ वेद पुरा-
 न बतावत बहु विधि तुम नहिं ध्यान धरो ॥
 देवि भजन बिनु मुक्ति न पैहो क्यों भव बन्ध
 परो ॥ जबगुरदेव ज्ञान अंजन दियो क्यों भव
 कूप गिरो ॥ जनम लहेउ तुम लख चौरासी
 अबहु न पेट भरो ॥ जीवन मुक्त देवि पद शे-
 वक ताहि सदा सुमिरो ॥ काशि प्रसाद भजो
 कमला पद ताहिनि अब विसरो ॥२१॥

दिवाने मन क्या जग भरमिरहे ॥ जग-

दवा को सुमिरन तजि के क्यों दुखदुसह सहे ॥
 सिन्धुसुता पद नावत्यागि के क्यों भव सिन्धु वहे
 वेद पुरान वखानत महिमा मुनि गन सकल
 कहे ॥ त्रिभुन स्वामिनिचरन भजन विनु
 कोउ न मुक्ति लहे ॥ भगवति भजन सुधा
 रस चाखे तापन कोई रहे श्रीकमलापद पदुम-
 भक्ति विनु काशीन और चहे ॥ २२ ॥

देविपद काहे न प्रीति किये ॥ त्याग भग-
 वति भक्ति सुधामृत मदिरा काहे को पिये ॥
 जिह्वा के वश जीव वधत है दायान तनिक
 हिये ॥ स्वाद विवस खल सुनत नहीं कछु
 क्या तुम सों कहिये ॥ जो जग जननी भक्ति
 चहो तुम हिंसा अवसि तजिये ॥ दया धरम
 गहि भगवति के पद भजन सदा करिये ॥ विष-
 इन के उपदेश अहित अतिताहि नही सुनिये
 जे नर अधम विमुख जननी पदते जग काहे

को जिये ॥ काशिप्रसाद सदा भगवति को
प्रीति सहित भजिये ॥ २३ ॥

पुनः ॥ समुक्ति मनगाफिल नहि रहिये ॥
मिथ्या जग वे वहार ताहि गहि काहे को दुख
सहिये ॥ जगदवापद भजन निरन्तर प्रेम सहित
करिये ॥ स्वास वान सम तन तरकसते जात
विचारु हिये ॥ काल ग्रमत छन छन तोहि
मूरख जगजननी भजिये हरि हर विधि से-
वित कमला पद शरणागत गहिये ॥ श्रीपद
विमुख रंकसुर नरमुनि ताहि नही तजिये ॥
काशी सेई भजिये देवी पद चारिहु फल
लाहिये ॥ २४ ॥

पुनः ॥ जनानि विनु सुत दुख कवन
हरे ॥ जो उपजाई सदा प्रतिपालति अहित
कवहुं न करे ॥ छमाकरति अपराध हजारन
अवगुन चित न धरे ॥ अन्त अमरपद देति

ताहि पुनि जो नहि सेइ मैरे ॥ पान कराइ
छार बालक को नितहि उदरभैरे ॥ जगदम्बा
पद भजन विना नर कोई न काज सैरे ॥ काय
वचन मन देविचरन सुधि कवहुं नहीं विसैरे
काशी प्रसाद जलाधि तनया भजि भव सागर-
हितैरे ॥ २५ ॥

जगत में काहे को जनम लियो ॥ ब्रह्मा
दिक सेवित देवीपद सुमिरन त्यागि दियो ॥
माति रहे मद मोह सुराते भक्ति सुधान पियो
इन्द्रादिक सुरनारदादि मुनि देवी भजनहि कियो
ताहि न भजहु परम मूरख नग्काहे को वृथा
जियो ॥ काशि प्रसाद महालच्छि मिपद भजन
सदा करियो ॥ २६ ॥

मोसाफिर जागि सचेत रहो । अगम पंथ
मति सो बहु गाफिल जो निजधाम चहो ॥
ठग अनेक तैरे संग लागे जिन कहँ मित्र कहो

स्तन अमोल स्वासत वप्यारे लूटे लेत अहो ॥
 सेइ चरन करि भजन देविको को नहि सुगतिल-
 है ॥ काशीप्रसाद त्यागि सब आशा कमला
 शरन गहो ॥ २७॥

दिवाने नर क्या जग पागि रहे । सुत धन
 धाम काम मोह मै अति अनुरागी रहे ॥ ए सब
 बैरी मित्र बने है स्वारथ लागि रहे । गफ-
 लत मैं तेरी आयु सिरानी अबहुं न जागि रहे ॥
 जगदम्बा चरनन ते मूरख काहे को भागि रहे ।
 काशिप्रसाद भजो कमला पद बहु दिन त्या-
 गि रहे ॥ २८ ॥

हेमन अबहुं न होत ठेकाने । लड़िकाई
 तौ खेलि गंवाये तरुनौ रहे भुलाने ॥ अजहुं न
 प्रीति करी भगवति पद दिन दिन जात बुढाने
 जगदंबा को दाश कहावत अचल नेम नहि
 ठाने ॥ बृथा कहा जग बंचत मूरख प्रीति रीति

नाहि जाने । जिन कह अपनो करि तूजाने सो
 तब सवाहि बिगाने ॥ अखिलेश्वरि जननी तजि
 औरहि हित नहि कहत सयाने । देव अनेक
 जौन जेहि भावत तासु अराधन ठाने ॥ का-
 शिप्रसाद मातु कमला विनु अपर नही मन
 आने ॥ २९ ॥

जग मै अधम नहीं कोई मोसो ॥ जग-
 दम्बा त्रिभुवन की पालिनी भजन हेतु मोहि
 पोसो ॥ ताहि विसारि विषय लपटानो करत
 नही अपसोसो ॥ सुनु मन मूरख अजहुं चेत
 करु कहउ विनै करितोसो ॥ विषय गरलमति
 पान करै अवपरिहरि अमिय परोसों ॥ काहुको
 बिभव पराक्रमको वल्ल काहू विवेक भरोसो ॥
 काशी प्रसाद मातु कमला सनितेरोइ मोहिभरो
 सो ॥ ३० ॥

क्या मन मूढ विषय मदमाते त्यागत नाहि

देह अभिमाना ॥ निज सुख विसरि सहतनाना
 दुख जग रचना मंह भरमि भुलाना ॥ वाला
 पन तौ खेलि बिताये तरुनाइ में लहेउ न ज्ञाना
 ॥ बिषय भोग मंह आयु सिरानी वृद्ध भये तब
 क्या पछताना ॥ अखिल विश्वस चराचर जहल गि
 जो जड़ चेतन जीव जहाना ॥ ब्रह्मशक्ति व्यापी
 सब घट में मूरख ताहि नहीं पहिचाना ॥ होय
 सचेत भजहु देवा पद क्या जानै कब होय
 पयाना ॥ जो पै अवसि त्यागि के जग को बृथा
 मोह में क्या लपटाना ॥ जलाधि सुताजुग चर-
 न सरोरुह भवतरिवे कहं दृढ़ जल याना ॥
 काशि प्रसाद ताहि गहिये अबजाहि भजे पावै
 निर्वाना ॥ ३१ ॥

क्या मन मूरख भयेउ दिवाना जगर-
 चना मंह भरमि भुलाना ॥ खानपान भोगनिद्रा
 वश आदि शक्ति पद प्रेम न ठाना ॥ समुक्ति

विचारि त्यागु चंचलता शास्त्र प्रमान बुद्धि अ-
 नुमाना ॥ देवी भजन बिनु मुक्ति न होई गावत
 सुरमुनि वेद पुराना ॥ सुस्थ सुदर्शन नृप सुवाहु
 वरदेवी भजन कर महिमा जाना ॥ शक्ति अरा-
 धि लहे इच्छा फल मुनि गनजाको सुजस बखा-
 ना ॥ जे जगदंबा चरन कमल तजि भजहिं
 अनेक देव विधि नाना ॥ त्यागि सुधमृत पिय-
 त कूपजल रस विशेष स्वाद नहि जाना ॥ सोई
 पंडित सोई परम विवेकी सोई ज्ञानी सोई परम
 सयाना ॥ जो त्रिभुवन जननी पद सेवक मन
 क्रम बचन भजै नहिं आना ॥ विधि हरिहर कुबरे
 गण नायक अतुल प्रभाव जासु नहि जाना ॥
 काशी को मन चंचरीक अब श्री कमला पद
 पदुम्म लुभाना ॥ ३२ ॥

राग मलार ।

देवी जी के दोउ नैना रतनारे ॥ सकल

चराचर स्वामी माधव तिनके मोह निहारे ॥
 पाये विधि शंकर वर प्रभुता जासु कटाक्ष नि-
 हारे ॥ सुर पति धनद धारि व्रत अविचल सेवत
 सांभ सकारे ॥ महिमा अमित बखानत जाके शेष
 गनेशहु हारे ॥ मुनि गन वेद पुरान बांचि जेहि
 ब्रह्म जोति निखारे ॥ जासु कृपा लहि काशी
 शंकर कोटिन अधम उधारे ॥ ताहि भजों त्रिभु-
 वन जननी को सेवक जाहि पियारे ॥३३॥

मल्लार ।

मोहि यह बरखा अतिमनभाई ॥ नारायण
 तन श्याम मेघ दुति चपला रमा सुहाई ॥
 मोती माल लसत दंपति उर वग पांती छवि
 पाई ॥ सुर मुनिगन जो बरनत महिमा जनु
 दादुर रटलाई ॥ नील कंठ ख नील कंठ शिव
 अस्तुति बहुविधि गाई ॥ छवि अपार सोई सुर
 सरिता बाढी पावस पाई ॥ सिन्धु सुता हरि

रूप सिन्धु दोउ तिन्हि मिलन जनुधाई ॥ हरि
प्यारी जलधर स्वाती विनु अपर सबहिं विस-
राई ॥ काशी चित चात्रिकमुद पावत श्री पद
ध्यान लगाई ॥३४॥

राग सोरठ ।

मातु कमला की वलिहारी ॥ जग सिर
जति पालति पुनि नाशति पलक निमेष मभा-
री ॥ भजिये ताहि सदा निशिवासर सेवत
जाहि मुरारी ॥ अपर जीव की कवन चलावै
महिमा अमित बिचारी ॥ जाके वश त्रिभुवन
को स्वामी श्री वैकुण्ठ बिहारी ॥ उदित भानु
दुति मुख पंकज छवि परम सुभग भुजचारी ॥
युग कमल विमल अति सुन्दर युग करबर भय
हारी ॥ चारिश्वेत गज अन्हवावत सुठि अमृत
कलश कर धारी सुखनिता मिलि परम मुदित
चित आरति लेति उतारी ॥ रूप अनूप अलौ-

किक शोभा वरनत शारद हारी ॥ ध्यान करत
हिय में निति काशी श्रीशंकर त्रिपुरारी ॥ ३५ ॥

राग बिहाग ।

हे मन रोगी कुपथहित्याग ॥ जो सतगुरु
तुव वैद बतावत केवल तबहित लाग ॥ मानि
परम हित धारहु प्यारे संजम विषय विराग ॥
सेवहु भवरुज नाशक चूरन श्रीपद पदुम पराग
हरन सकल दुख त्रिविध ताप को देवि चरन
अनुराग । विषय मिठाई तोहि अहित बहु तामें
कबहु न पाग ॥ ब्रह्मानन्द सुधारस पैहै छूटत
ही भवराग ॥ गावहु श्रवन सुखद देवी पद
सुन्दर राग बिहाग ॥ काशी अमिय मूरि जो
पायो सो रोगी बडभाग ॥ ३६ ॥

राग भैरव ।

प्रात समै द्वारे सुर टेस्त जागिये कमला
माई ॥ टेक ॥ उठिये मातु त्रिभुवन की पालिनि

विनवहिं सुर समुदाई ॥ विधिहरि शंकर सुजस
 बखानत तब चरनन मनलाई ॥ वेद करत अस्तु-
 ति कर जौरे नाना भांति मुहाई ॥ मागध वेदी
 गन यशवरनत रुचिर सुमंगल गाई ॥ सुनत
 कोलाहल भगवति जागी उठी लेत जमु-
 हाई ॥ रतनारे दृग कछु अलसाने लखि मृग
 वाल लजाई ॥ चारि भुजा जुग कमल अभय
 वर भक्तन हिय सुखदाई ॥ चरन कमल अति
 सुभग ललित जनु छवि सरिता बढ़ियाई ॥
 काशि प्रसाद निसखि वा छवि को बारबार बलि-
 जाई ॥ ३७ ॥

प्राप्ती राग विलास ।

भोर भयो जागहु जग जननी ॥ त्रिविधतापदुःख
 संकट हरनी ॥ महिमा जासु जगत विख्याता सुरनर
 मुनि त्रिभुवन की माता ॥ जापद पदुम अखिल
 भय हारी ॥ सेवत अति अनुराग मुरारी ॥ ताहि

वंदि विनवत सुर स्वामी ॥ जागिये मातु नमा-
 मि नमामी ॥ विधि हरि शंकर धनदहुतासा ॥
 राखहिं तब चरनन की आसा ॥ तजि निद्रा
 सुनि विनय हमारी ॥ उठिये मातु सुर मुनिहित
 करी ॥ सुनत शब्द जागी महरानी ॥ रूप
 सिंधु शोभा गुनखानी - आरति करत परम हर
 खानी सुरतिय गावत मधुरसुबानी ॥ निरखि
 रमा पद पंकज शोभा ॥ काशी चंचरीक मन
 लोभा ॥ ३८ ॥

प्रात भजन रागेरामीसिरी ।

जननी जागु अब भयो भोर ॥ मंद छवि उडगन
 गगन भये करत तमचुर शोर ॥ द्वार सुरमुनि सु-
 जस गावत शब्द अति घन घोर ॥ गुनअपार न
 जाय वरनो मेरि मति अति थोर ॥ गात प्रात विभात
 रविछवि रुचिर भौंह मरोर ॥ विनय काशी करत
 अति अनुराग जुग करजोर ॥ हरहु सब दुख
 मोहि प्रति दिन मातु आशा तोर ॥ ३९ ॥

उमिरिया तैं काहे को गवावतरे हे मन नि-
 पट गवार ॥ बाल जुवा दोऊ पन बीते ढोवत
 जग को भार ॥ अंग सिथिल भये आई बुढाई
 अजहुँ न चेतत यार ॥ गरभ मांहि बहु भांति
 किये तुम देवी भजन करार ॥ आवत ही जग
 में सब बिसरे भजे न एकौ बार ॥ चारिहु वेद
 पुरान बखानत मुनिगन कीन विचार ॥ कलि-
 युग तप व्रत नहिं बनि आवत देवी भजन
 अधार ॥ जनमत मरत बहुत दिन बीते कीने
 पाप अपार ॥ भजन किये नहिं जगदम्बा को
 लीने जनम हजार ॥ बहुत दिना तुम वृथा
 बिताये तजे न जग वेवहार ॥ काशी सेई भजो
 देवी पद अब मतिकज बिगार ॥४०॥

पार अब कैसे को जैहैरे नदिया अगम
 अपार ॥ गहिरी नदिया नाव पुरानी खेवनहार
 गंवार ॥ निशि अधियारी सोइ मतवारी जाके हाथ

पतवार ॥ यह संसार नदी अपार मैंह बूडत तैं
 मझधार ॥ भगवति चरन जहाज त्याग कै औरन
 कोउ आधार ॥ काम क्रोध मोह घोर बहु मछ
 मगर घरियार ॥ सिन्धु सुता जग मातु बिना
 अब कोउ न बचावनि हार ॥ जग मैंह अधम
 पतित खल जेते मैं तिन मैंह सरदार ॥ अधम
 उधारनि काशी देवि बिनु कौन करै भव
 पार ॥ ४१ ॥

विषय माहि तेरी बीती उमिरिया किये न
 देवि पद प्रीति हो ॥ माया विवसतै कछुक न
 जाने देवी भजन की रीति हो ॥ बाला पन को
 खेति गवाये तरुनाई तिय प्रीति हो ॥ वृद्ध भये
 पर क्या पछताने गई आयु जब बीति हो ॥
 खान पान में रहत लुभानो इन्द्री लिये नहि
 जीति हो ॥ सुने न श्रवन सुखद अति पावनि
 देवी कथा पुनीति हो ॥ घोर अथाह महा भव

सागर बूडन जह भोति हो ॥ सिन्धु सुतापद
 दृढ़ तरनीगहु जहां नहीं कोई ईति हो ॥ जग
 दम्बा पद प्रीतसुधारहु त्यागहु सकल अनीति हो ॥
 काशी सेई भजहु जग जननी राखि हिये पर-
 तीति हो ॥ ४२ ॥

भोगत विषय बहुत दिन बीते तजे न जग
 बेवहार हो ॥ बीति जाति तेरी सारी उमिरिया
 सोचत नाहिं गंवार हो ॥ माया रचित जगत
 को सागर सूझत वार न पार हो ॥ सिन्धु सुता
 पद कमल पोत विनु और न कोई अधार हो
 ॥ जनम जनम तेरी सब विधि बिगरी अजहुन
 लेत सुधार हो ॥ चिन्ता मणि नरतन लाहि निज
 कर कोहे गवावत यारहो ॥ जनमे योनि लाख
 चौगसी सीस लिये अघ भारहो ॥ काशी भज-
 हु त्रिभुवन जननी को तजि संसार बिहार हो
 ॥ ४३ ॥

श्री जगदम्बा का चौसठ उपचार का पूजन ।

राग खमाइच ॥

पूजन जगजननी को करो री ॥ प्रथम ध्यान
करि जगदम्बा को स्तन सिंघासन आनि धरो-
री ॥ स्वागत कुशल पूछि देवी को निरखि जुगल
पद ताप हरोरी दूर्वा सरसिज विष्णु क्रांत युत पाद्य-
देइ श्रम दूरि करोरी ॥ गंध फूल जवसरसो दूर्वातिल
कुश अक्षत मिश्रित रोरी ॥ तीनि अर्घ्य दै मातु करा-
म्बुज आचमनीय विधान रचोरी ॥ जाती फूल
कंकोल लौंग युत गंध सलिल को शुद्ध करोरी ॥
स्वधा उचारि आचमन श्री मुख तीनि बार दै
मोद लहोरी ॥ सघृत दही मधुपर्क हेतु लै शहत
साहित धरि कनक कटोरी ॥ स्वधा उचारि
मातु कर पंकज मधुपर्कहि अति प्रीति धरोरी ॥
पुनि आचमन तीनि दै मातुहिं स्तन पादुका
धरि सुठि जोरी ॥ पंच घोष युत मातु संग है स्नान

मंदिर आगमन करोरी ॥ स्नान वस्त्र दै कनक
 पीठ धरि दतुवन हेतु कपूर धरोरी ॥ मुख धोवाई
 वारह कंदूषन देइ परम आनन्द लहोरी ॥ मुख
 प्रच्छालि आचमन दैके पोछि मुखांबुज शुद्ध
 करोरी ॥ करि अभ्यंग द्रव्य की रचना जननी
 अंग अभ्यंग करोरी ॥ केश शोधि श्री अंग
 उवटि के उष्णोदक करि कलश भरोरी ॥ पंचा
 म्रित फलादि वस्तु तै स्नान विधान अनेक रचोरी
 मंत्र स्नान उशीर कुसुम युत गंगा जल में रत
 नहि बेरी ॥ कनकामृत के सहित मंत्र पढि
 मंत्र स्नान विधान करोरी ॥ मुख दैतीनि आ-
 चमन मातुहि केश अंग सुठि पोंछ बहोरी ॥
 जुगल वसन रविबाल वरणा को पहिराबहु बहु भांति
 निहोरी ॥ मंत्र सहित आचमन तीनि दै कनक
 रचित उपवीत धरोरी ॥ धरि पादुका मातु चरन
 नहित विनती करहु उभय करजोरी ॥ बाजत

बाजन जगदम्बा संग भूषन मंदिर मुदित
 चलोरी ॥ तहँ आसन बैठारि मातुको अंग अंग
 अति रुचिर सजोरी ॥ नखसिख भूषन सुठि
 सँवारिकै रतन पादुका आनि धरोरी ॥ बजत
 शंख घंटादि वाद्य सब याग स्थानागमन करोरी ॥
 रतन सिंघासन हेम पीठ पर जगदंबा स्थान
 रचोरी ॥ अंगरागहित मृगमद चन्दन केशर
 अगर सुगंध भरोरी ॥ कपय कपूर कचूर सुरचित
 जटामांसि संग मिश्रित रोरी ॥ रुचिर सुधारि
 कनक भोजन महुँ अलक निवारि सुतिलक
 रचोरी ॥ अंग अंग सुगंध रचित करि दृग
 अंजन माथे शुभरोरी ॥ भालसिंदूर बिन्दु रचि
 सुन्दर केसर खोरि विचित्र लसोरी ॥ अक्षत
 मुक्ता रतन मुतंडुल यव मिश्रित सुगंध महबोरी
 करि अरपन त्रिभुवन जननी को सुमन माल
 निर्मान करोरी ॥ अमल कमल चंपक गुलाब

अरु जपा वकुल अति वास भरोरी ॥ पारि-
 जात शत पत्र मल्लिका दाडिभ कुंद सुमाल
 रचोरी ॥ गुहि अति रुचिर सुमन माला को
 मातुहि पहिराबहु कर जेरी ॥ धूप दीप पाद्य
 अचमन पुनि दें नैवेद्य विधान करोरी ॥ सूप
 पूष पापड बहु पूरी मोदक माखन रुचिर
 कचोरी पंचामृत दधि दूध मलाई घेवर पायस
 मधुर पकोरी ॥ पटरस भोजन विविध भांति
 कै सुधास्वाद पकवान धरोरी ॥ अमृत बनाइ
 मंत्र मुद्रा सो सादर जग मातुहि अरपोरी ॥
 करि बिनती बहु ध्यान मातु को गंगा जल
 शुचि कनक कटोरी ॥ शीतल सुवास पियाइ
 देविको उष्णोदक निर्मान करोरी ॥ कर धोवाइ
 उवटाइ गंध सोंगंध कंडूषन विधान विरचोरी ॥
 पाद्याचमन देइ मातु को देहु रुचिर पंगी फल
 तोरी ॥ गरी बदाम छोहाडा किसमिस मधुर

दाखवर पात्र रचोरी ॥ पनसरसाल कसेरु
 जामुन बीजापूर खजूर बहोरी ॥ नार नारंगी
 श्रीफल नाना भांति सप्रीति बटोरी ॥ जगदंबा
 को अरुपि प्रेम सो मुदित चारिफल आजु
 लहोरी ॥ ऐला केशर लवंग जाति फल खैर
 संग कंकोल करोरी ॥ विरचहु रुचिर पान को
 बीडा कस्तूरी कर्पूर भरोरी ॥ जग जननी को
 खवाइ प्रीति सो कनक दक्षिणा आनि धरोरी ॥
 करि प्रदक्षिणा तीनि मातु को पुष्पांजलि
 दै पाप हरोरी ॥ करहु प्रणाम प्रणत पालिनी
 को विविध विनय दोऊ करजोरी ॥ कनक
 छत्र दै चवर दुखवहु व्यजन आति प्रीति
 करोरी ॥ गीत वाद्य नृत्य नानाविधि जगमातु
 हि सरवस अरपोरी ॥ करि पूजा चौसठ प्रकार
 को विविध भांति बहुवार निहोरी ॥ काशी

भजि भगवति पदपंकज भुक्ति मुक्ति दोउ हाथ
लहोरी ॥ ४४ ॥

॥ राग होरी ॥

कमला खेलति ललित फागरी ॥ सिन्धु
सुतातन वसन अवीरी हरि शिर सोहत अरुण
पागरी ॥ इत सुरगन नारायन के सँग जलधि
सुता सँग सखीरी नागरी ॥ देवमृदंग सितार
वजावत सुरवनिता गावत सुरागरी ॥ माधव
हाथ कनक पिचुकारी कमला केकरहेमगागरी ॥
कमला सैनदई सखियन को हरिहि सुरँग
अन्हवाई भागरी ॥ आजु दिवस आनंद मंगल
को लाज सकोचहि देहु त्यागरी ॥ हँसते दौरि
डारो रंगहरि पर लगो है पिताम्बर अरुण
दागरी ॥ हरि प्यारी दंपतिकी शोभा जे निरखे
ताको बड़ो भागरी ॥ सुरमुनि जाहि भजति
पावत धारि नेम व्रत जोग यागरी ॥ स्मारमापति
चरन भजनमँह काशी के मन परम रागरी ४५

॥ होरी ॥

कमला हरि होरी मचाई ॥ इतते आये
 है नारायन प्रभुसिन्धु सुता उत आई ॥ खेलत
 फाग परम आनंद भरि शोभा बरनि न जाई ॥
 सकल सुरगन मुद पाई ॥ हरि संग विधिहर
 सुरपति दिन करलसत देव समुदाई ॥ उमाशची
 वानी बनिता कमला संग सोहाई ॥ सकल
 सुरतिय जुरि आई ॥ बाजत वेनु मृदंग ताल
 डफ बीना अरु सहनाई उडत गुलाल कुमकुमा
 अबरख केशर रंग बनाई ॥ मधुर धुनि होरी
 गाई ॥ हरि कर कमल कनक पिचुकारी लियेउ
 परम हरखाई ॥ हेमकलश लिये सिंधु किशोरी
 केशर रंग भराई ॥ दियो हरिको अन्हवाई ॥
 कमला सैन दिये सखियन को हरि को पकरि
 ले आई ॥ सजि सिंगार सुठि नवल बधू को
 शिरपर चुनरि ओढाई ॥ नाथजी को नाच नचाई

रमारमापति हरखित खेलात होरी को साज सजाई
 निराखि ललित छवि हरि प्यारी की काशी मुदित
 बलिजाई ॥ मनहु चारिहु फलपाई ॥ ४६ ॥

॥ होरी ॥

खेलहु भरि अनुराग आजुत्रिभुवन जन-
 नी संग होरी हो ॥ नेम धरम व्रत संजम जपतप
 सखा समाज बढोरी हो ॥ असुवानि भरिनयनन
 पिचुकारी प्रीति को रंग निचोरी हो ॥ अन्हवावहु
 श्रीसिन्धु लली कहँ लोक लाज त्रिनतोरी हो ॥
 बाजन सुभग बजावहु अनहद प्रेम अवीर के
 भोरी हो ॥ पहिरि भक्ति को वसन ललित
 छवि प्रेम रंगमँह वारी हो ॥ बसहु निरन्तर
 मेरे हिय मैं छीर समुद्र किशोरी हो काशी जग-
 दम्बा सो प्रति दिन विनय करत कर जोरी
 हो ॥ ४७ ॥

॥ होरी ॥

तजि जग को वेवहार सकल करु देवि चरन

अनुरागरी ॥ दयाशील सज्जनता गहि हिय
 कपट कुटिलता त्यागरी ॥ सिरजत विधि संसार
 अखिल लहिजा पदपदुम परागरी ॥ पहिरहु
 बसन ललित सुनेम को धारि धरम शिर पगा
 री ॥ जगदम्बा कहँ भजहु निरन्तर लहि जग
 विषय विरागरी ॥ जलधि सुता पद प्रीति रंगो
 मन गावत सुन्दर फागरी ॥ देहु कृपाकरि
 भक्ति चरन को काशी इहै वर मांगरी ॥ ४८ ॥

॥ प्राप्ती राग भैरव ॥

प्रात समै सुरटेरि जगावत जागहु जलधि
 कुमारी ॥ उठहु मातु त्रिभुवनकी स्वामिनि श-
 रणागत भयहारी ॥ सुनत शब्द जागी महरानी
 नयन सरोज उघारी ॥ जैजैकार मचावत सुरगन
 जै देवन हितकारी ॥ पानदान लिये निजकर
 पंकज श्रीवैकुण्ठ विहारी ॥ विधि टाढेसित चँवर
 दुरावत छत्रगहे त्रिपुरारी ॥ मागधवंदी सुजस

बखानत महिमा वेद उचारी ॥ सुरवनिता आ-
 रती उतारति साजि कनक की थारी ॥ नाचत
 मिलि गधरव अपछरा गान करत सुरनारी ॥
 काशि विलोकि प्रात माकी छवि हरखि जात
 बलिहारी ॥ ४६ ॥

॥ राज कल्याण ॥

जै जै भव भीति हरनि अखिल विघन
 तिमिर तरनि मंगल मुदकरनि जयति त्रिपुर सुं-
 दरी ॥ सुरपति हरि विधि महेश वरुण धनद
 रविगनेश सेवहि तब चरन कमल मातु शांकरी ॥
 महिमा अतुलित अनन्त वेदहु पायोन अंतगा-
 वहि निति सुयश संत दिवस सरवरी ॥ रूपराशि
 छवि अपार वरदा अति सै उदार सेवक प्रति
 पालि देवि सकल अघहरी ॥ सीस मुकुट श्रवन
 जुगल शोभित ताटक बिमल गलेहार मुकता
 वल्लितसत सतलरी ॥ कंकल केयूर ललित सोहै

कर कमल मांहि रतन जड़ित चूरी छवि देति
अतिहरी ॥ काशी करजोरि विनती करत त्रि-
पुराभवानि कमलापद भक्ति मोहि देहु सुख-
करी ॥ ५० ॥

॥ राग यल्यान ॥

जै जै जग जननि मातु सुरनर मुनि
अखिल त्रातु संकट दुख हरनि जैति जैति
कालिके ॥ रसना सुललित विशाल मनहु
तरनि प्रातकाल भाख इन्दु वाललसत मुंड
मालिके ॥ कृपा न मुंड धारिनी मशान थल
विहारिनी सुरारिदल संघारिनी जै जै कपालि
के ॥ जै त्रिपुर दैत्य मर्दिनी जै अंबिके कप-
र्दिनी जै जै निशुंभशुंभ रक्त बीज घालिके ॥
चंड मुंड नाशिनी सदा शिवांक वासिनी
सुबुद्धि की प्रकाशिनी गिरिश बालिके ॥
कमलापद अचल प्रीति दीजै जननी पुनोति
काशी तब शरण माहि प्रणत पालिके ॥ ५१ ॥

॥ आरती काली जी की ॥

जै जै जै जग जननी जै दछिन काली
 तुव पदपंकज से बहि विधिहर वनमाली ॥ जै
 जै जै दुख हरनी जै असुरनघाली ॥ शवशिव
 हृदय विराजति मधुते मतवाली ॥ जो निज
 वली उपजाइ सृष्टि सगरी पाली ॥ श्यामा
 पूरन कामा कर खप्परवाली ॥ कोटि वाल रवि-
 निंद जिह्वा की लाली ॥ करति मशान विहार
 संग कोटिन आली ॥ नाचति योगिनि मुदित
 देत भैरव ताली ॥ आरति करति विबुधतिय गहि
 कंचन थाली ॥ काशी हिंदेहु हुरमा पद भक्ति
 सुगति शाली ॥ ५२॥

प्रात समैं श्री जग जननी को सुरपति
 विधि हरि ईश जगावैं ॥ उठिये मातु त्रिभुवन
 की स्वामनी सुरगन ठाढ़े महिमा गावैं ॥ माग
 धवंदी गन मिलि द्वारे जगदम्बा को सुयश

सुनावैं ॥ सुनत उठी त्रिभुवन की पालिनी सुर
 मुनि जै जै कार मचावैं ॥ जागि र-मा बैठी
 सिंघासन कनक कलश करिवर अन्हवावैं ॥
 आरति कशति विबुधतिय सुन्दरि गावति गीत
 परम मुद पावे ॥ लहाँहि परम गति मुनि जेहि
 जांचत सकल ताप अघ पुंज नसावैं ॥ जेनर
 सेई मातु काशी कह जगदंबा पद प्रीति दि-
 दावैं ॥ ५३ ॥

॥ राग कान्हरा ॥

सोहति हरि सँग सिंधु किशोरी ॥ सुन्दर
 सुभग मनोहर जोरी ॥ तडित प्रभातमृदमंजुल
 गाता ॥ जग पालिनि त्रिभुवन की माता ॥
 ललित जुगल लोचन रतनारे ॥ कोर जलक
 सुधूंघर वारे ॥ केहार कटि सुठिपीन नितंबा ॥
 कोमल अधर लाल जनुविंवा ॥ अखिल भुवन
 चौदह की करिनि ॥ आदि शक्ति वैकुण्ठ विहा-

रिनि ॥ असुर दलनि दानव कुल नाशिनी
 नारायन हिय धाम निवासिनि ॥ सुमुनि म-
 हिमा वरनत हारे ॥ ब्रह्मरूपिनी मुनिन विचारे
 उपमा दूँढि रहे कवि हारी ॥ किमि पटतरिये
 समुद्र कुमारी जासु प्रभाव वेद नहिं जाना ॥
 तासु रूप किमिजाय बखाना ॥ देहु भक्ति निज
 जलधि कुमारी ॥ काशी प्रसाद जात बलि-
 हारी ॥ ५४ ॥

॥ भैरवी ॥

मैया मोरी अब कैसे लाज रही ॥ महा
 मोहजार बड़ पापीसो मेरी बाँह गही ॥ अगम
 पंथ कोई संग न साथी चिन्ता परम लही ॥
 अगुन अनाम पिया प्यारे की विरह न जात
 सही ॥ पूछि थकी मैं पिय की खबरिया अब
 लों न काहू कही ॥ निशि आंधियारी सँगलागे
 उग लूटे लेत नितही ॥ बेगि पुकारो काशी
 देवि को राखि है लाज सही ॥ ५५ ॥

॥ भैरवी ॥

कमला तोहि परो मैं पैयां ॥ मैं बालक
अजान तुव पोसो नितहिं करौं लडिकैयां ॥
तुव तजि अपरन मोहिं भरोसो जानत याहि
गुसैयां ॥ नहिं गिनांहि अपराध हमारे जैसे
गगन जुन्हैयां ॥ इन्द्री चंचल जीभ चटोरी
विषयन मांहि लुभैयां ॥ जदपि बाल मातुहि
नहिं मानत करत बहुत मचलैया ॥ सुतहि कबहुं
नहिं त्यागति माता लै निज गोद २ कन्हैयां ॥
जोग तपस्या नेम धरम ब्रत जाने मेरी बलैयां ॥
केवल काशी सेइ देवि पद ताही सो प्रीति
लगैयां ॥ ५६ ॥

॥ राग कल्याण ॥

बरनौगुन रूप ललित मातु इंदिराके ॥
आदि शक्ति रूप रास माधव उर जासुवास
अखिल जगत शृष्टिलय निमिष विलास-
जाके ॥ सोहति जोरी अनूप सुन्दर अतु-

लित स्वरूप श्याम मेघलस तसंग मानहु चप-
 लाके ॥ नूपुर छवि सुठि विभाति पद नखदुति
 जगमगाति कोटिन्ह रघिवाल लजहिं निरखत
 तरवाके ॥ जंघाकदली के खंभ पीन शुभग
 जुग नितंव किंकिनी विलसति सुरुचिर
 छीन कटि रमा के ॥ त्रिवली तिहु तापहरनि
 नाभी अति मोद करनि जुग कुच जनु कनक
 कलश ब्रह्म सुख सुधाके ॥ विकशित मुख मनहु
 कंजु नैन चंचरीक मंजु अलकावालि तनु सेवार
 शोभा सरिताके ॥ भूषन भूषित सुअंगला
 जहिं लखि बहु अनंग दीपीत मुख की उदो
 तिजोतिचंद्रिकाके ॥ तपित हेम सदृश प्रभा
 कांति कोटि चन्द्र कलातेजपुंज निंदक जनु
 कोटिन्ह सविताके ॥ गनपति यम वरुन शेष
 अनिल अनल शशि धनेश सुरपति विधि हरि
 महेश सेवक पद माके ॥ दीजै वर विमल माय

सुर मुनि हित नित सहाय काशी हिय वसहि
चरन पंकज कमलाके ॥ ५७ ॥

राग भैरवी ।

मोहि देवी भजन मन भावतरे ॥ योगी
साधि सकल इन्द्रिन जेहि हृदय कमल मँह
ध्यावतरे ॥ मुनि गण वेद पुरान बांचि जेहि
ब्रह्म रूप ठहरावतरे ॥ सकल सुरासुर जाहि
भजाहि निति विधि हरि हर शिर नावतरे ॥
आदि शक्ति त्रिभुवन को जननी जो जग को
उपजावतरे ॥ पाइ जासु पद रज को ब्रह्मा अवि-
कल स्त्रिष्टि वनावतरे ॥ सेससमुझि महिमा सहस्र
शिर को भार उटावतरे ॥ प्रलय काल करि भस्म
रुद्र निज अंग विभूति लगावतरे ॥ कविमुनिम
हिमावरनत हरि वेदहु पारन पावतरे ॥ काशील
हतसव जीव मुक्ति को बहुरि नही जग
आवतरे ॥ ५८ ॥

मोहि सिन्धु सुता छवि भावतरे ॥ निरखत
 रूप अनूप जासु नर ब्रह्मानन्द हि पावतरे ॥
 चारि भुजा जुग कमल अभय वरसेवक ताप
 नसावतरे ॥ कमलासन आसीन रमाजी को
 करिवर चारि अन्हावतरे ॥ विसर सुटिना
 सिका भाल मह सेंदुर विन्दु सुहावतरे ॥ अरुन
 कमल छवि मुख की शोभा नैन भवर
 हि लुभावतरे ॥ जगमगात रतनन के भूषन
 कोटि तरनि लजावतरे ॥ जासु चरन पंकज
 निशिवासर विधि शंकर हरि ध्यावतरे ॥ का
 शीभजहु कमला पद पंकज काहे को जनम
 गंवावतरे ॥ ५१ ॥

॥ गाग कान्हरा ॥

श्री गौरी महारानी के जनम की वधाई ॥
 जनम लियो गिरी राजकिशोरी ॥ निर्मल ग्रीष
 मरितु शुचिपावन जेठ मास तिथि चौथ अंजो-

री ॥ आदि जोति सचराचर जननी भक्ति हेतु
 अवतार लियोरी ॥ गावत किन्नर नाचत अपसरा
 रूप राशि सुन्दरि तन गोरी ॥ आरति करति
 विबुध तिय हरखित साजि फूल फल नखियर
 रोरी ॥ मंगल गावति मोद बढ़ावति करति नि-
 छावर ललित पिछोरी ॥ महाराज गिरीराज
 हरखभरि स्तन लुटावत भरि भरि भोरी ॥ लूट-
 त जाचक भये अजाचक शोभा वरनि सकै
 कविकोरी ॥ बालरूप त्रिभुवन जननी सो वि-
 नती इहै करौं करजोरी ॥ काशी रमा पद पंक-
 ज महँनिति भवर समान वसै मति मोरी ॥ ६० ॥

॥ भैरवी ॥

मैया मोही भक्ति आपनी दैरी ॥ टेक ॥ श्रवन
 सुजस सुनि तोहि ढिग आयो राखि आपनो कैरी ॥
 सुत अव गुन चित धरति न जननी अनुचित
 सबहि सहैरी ॥ जौ जग जननी नाम तिहारो

तो मम शोक हैरी ॥ बसै सदा हिय ध्यान
 रमाको हरन सकल भव भैरी ॥ उरध जुगल
 कर कमल विराजत जुगवर दान अभैरी ॥ ज-
 दापि मोहि खल अधम अपावन जग के लोग
 कहैरी ॥ जो जगदम्बा मोहि अपनावै परम
 सुजसहि लहैरी ॥ एहि कलि काल कठिन सब
 साधन तपव्रत योग अहैरी ॥ काशी सेइ मा-
 तु कमला को श्रीपद भक्ति चहैरी ॥ ६१ ॥

॥ घाटो ॥

भजले कमला के चरनवा ॥ तजि जग वेवहार
 मोरे हेरमा ॥ कैसे मैं बखानों महिमा देवी च-
 रित अपार मोरे हेरमा ॥ निशिदिन देवी को
 अराधहु ॥ जेहिसेवै करतार मोरे हेरमा काशी
 भजिहु मुक्तिहि पैहै देवी चरित उदार मेरे हेरमा
 ॥ ६२ ॥ देवी जीको कैसे कै पावों । गैली
 डहरि भुलाय मोरे हेरमा ॥ मग जोहत बहुदिन

वीते । कोउ दै न लखाय मोरे हेरमा ॥ जगमें
 हेरत अव थाकेउं । गैली पेडुरी पिराय मोरे
 हेरमा ॥ सतगुर के जाउ बलिहागी । मोहि दैहें
 बताय मोरे हेरमा ॥ काशी सेइ रमा गुन गावहु
 जग सोच विहाय मोरे हेरमा ॥ ६२ ॥

॥ पुनः ॥

मोरे मन निशिदिन भादै । कमलार्जी को ध्यान
 मोरे हेरमा ॥ नैनन काजरकी शोभा मुख मृ-
 दु मुसुकान मोरे हेरमा ॥ माथे रतन किरीट
 विराजत । गले मोतिन के हार मोरे हेरमा ॥
 कुंडल मकरकृत कानन ॥ वेदी लसति ली
 लार मोरे हेरमा ॥ भुज चार अभै वर सुन्दर ।
 कर जुगल सरोज मोरे हेरमा ॥ रविकोटि
 तेजलखिलाजै । अंग देखि मनोज मोरे हेरमा
 करिवर सित चारि अन्हवै ॥ मधुरामृत धार
 मोरे हेरमा ॥ काशी निरखत कमला छवि ।
 पावैमोद अपार मोरे हेरमा ॥ ६३ ॥

पुनः

विनती कमला जीसो मेरी सुनिये चितलाय
मोरें हेरमा ॥ जगमै बहुत दुख पायों । विषयन
लपटाय मोरे हेरमा ॥ जनमेंउ मैं लख
चौरासी । तेरो चरन विहाय मोरे हेरमा ॥ कीने
अपराध हजारन ॥ जो गने न गनाय मोरे
हेरमा ॥ काशी तब शरनै आयो । पालिये जग
माय मोरे हेरमा ॥ ६४ ॥

पुनः ।

ऐहो पथिक सुनि लीजो । तोहि कहउं
बुझाय मोरे हेरमा ॥ गाफिल नहिं सोवै मुसा-
फिर । खटके की सराय मोरे हेरमा ॥ तेरे कर
स्तनअजूवा । केहि दिन गंवाय मोरे हेरमा ॥ तेरे
संग बहुत ठग लागै । झूठी प्रीति देखाय मोरे
हेरमा ॥ मग चलत बहुत दिन बीते । गई डहरी
हेराय मोरे हेरमा । तेरो कोई नहिं साथी । दुख

मैं न सहाय मोरे हेरमा ॥ सतगुरुजन बाट लखावै
 पहुँचे घर जाय मोरे हेरमा ॥ काशी भजु सिंधु
 सुता को । जग प्रीति विहाय मोरे हेरमा ॥ ६५ ॥

॥ दुमरी ॥

बीति गई तेगी सारी उमरिया ॥ बहुत दिना
 पर नरतन पाये गानकिये नहिं देवि हुनरिया ॥
 अबलों कमला सुधि नहिं पायउं पुछि थकेउं
 जननीकि खबरिया ॥ निशि अंधियारी पंथ न
 सूझत देवी मिलन की हेरानी डहरिया ॥ सत
 गुरुज्ञान दीप जौं बारहिं सूझि परै मग मिटई
 अंधरिया ॥ कीट पतंगउ सुक्ति लहत जहं गति
 दाइनि मेरी काशी नगरिया ॥ ६६ ॥

राग मल्हार ॥

मेरो मन देवि भजे सुख पावत ॥ जासु
 शक्ति लहि विधि जग सिरजत पालक हरिहु
 कहावत ॥ तासु पाई बल प्रलय काल शिव

अखिल विश्व बिनशावत ॥ अतुलित जासु
 प्रभाव विदित जग महिमा सुर मुनि गावत ॥
 चारिहु वेद नेति कहि बरणात शक्ति ब्रह्म ठहरा-
 वत ॥ परा शक्ति अव्यय अविनाशिनि जाहि
 त्रिदेवहु ध्यावत ॥ अधम उधारन हित सोई
 जननी काशी मुक्ति लुटावत ॥६७॥

पुनः ।

बहुरि यह अवसर मिलिहै नांहि ॥
 मूरख लख चौससी भरमत बहु दिन बीते जाहिं ॥
 पाथे अव नर तन चिंतामणि अजहुँ सुधारत
 नाहि अखिल विश्व सुर मुनि जड़ चेतन जहुँ
 लागि जगत लखाहि ॥ प्रकृति सनातनि ब्रह्म
 शक्ति जो व्यापिरही सब मांहि ॥ विधि हरिहर
 सुरगन निशिवासर ध्यान करत हैं जाहि ॥
 जगदम्बा त्रिभुवन की जननी मूढ़ विसारत
 बाहि ॥ सिंधुसुता कहँ भक्ति पियारी सुरमुनि

जाहि सराहि ॥ काशी भजु कमलापद पंकज
प्रीति प्रतीति निवाहि ॥ ६८ ॥

दिवाने मन श्री पद क्यों विसरे ॥ यह जग द्वि
पिन काम दावानल जीव अनेक जरे ॥ कृपा वृष्टि
करि जाहि बचावति भगवती ते उबरे ॥ विषय भोग
लपटाय जीव जग माया बंध परे ॥ जग दम्वा
पद कमल भजन विनु कवहुँ न काहु तरे ॥
अपर देव जगदीश्वर परिहरि नहिं भव भीति हरे ॥
काशी सेइ भजे देवी जे बहुरिन जनम धरे ॥ ६९ ॥

भजो मन देवी चरन अभिराम ॥ अंतकाल
कोउ संग न जैहैं धन संपति सुत बाम ॥ सोचि
विचारि भजहु कमला पद भवभय हर सुखधाम
जो तन देइ सदा प्रतिपालति भगवति सिंधु ल-
लाम ॥ अपर देव आराधे से चित लहत नाहिं
विश्राम ॥ काशी प्रसाद दास कमला को औरन
सो नहिं काम ॥ ७० ॥

भजो मन देवी चरन सुख दाता ॥ पर-
शक्तिसुर मुनि की कारण अखिल चराचर माता ॥
अमित प्रभाव चरित्र अलौकिक जासु जगत
विख्याता ॥ अपर देव की कौन चलावै सेवत
जाहि विधाता ॥ भजिये ताहि मातु कमलाको
महिमा प्रगट विभाता ॥ ध्यावत जाहि निरन्तर
निशिदिन शंकर हरि सुरत्राता ॥ काशी प्रसाद
भजत निशिवासर कमलापद जल जाता ॥७१॥

जनानि विनु सुत दुख भेटै कौन ॥ जगदंबा
त्रिभुवन की माता आदि शक्ति है जौन ॥
लै औतार सदा भय नाशति सुरनर मुनि के
तौन ॥ कोई संग तेरें नहि जैहै सुत दारा धन
भौन ॥ अंत काल तन कह परिहरि जवनि
सरिजाय है पौन ॥ साधन सकल कठिन
कलि युग मँह तप व्रत संजम भौन ॥ काशि
देवि पदसेवन विनु नहि छूटत आवागौन ॥७२॥

जननी विनु कवन हरे सुत पीर ॥ जो
 जनमाइ सदा प्रतिपालति पान करावत छीर ॥
 सो जग जननी चरन भजन विनु कैसे मिटै
 भवभीर ॥ जबते माया जीव पगन महुँ डोरैउ
 कर्म जंजीर निकसन चहत जात अरुभानो
 विवस धरत नहिं धीर ॥ तृष्णा वस सोई आपु
 बंधानो जैसे मरकट कीर ॥ काशी हरि प्यारी
 आराधे बहुरि न लहत शरीर ॥ ७३ ॥

कोउ इतनी कहो कमला जी सो जाय ॥
 जबते तब पद कमल त्यागि रहैउ विषय लप-
 टाय कल नहिं पड़त सहत नाना दुख निज
 सुधि गयउ भुलाय ॥ एहि कलिकाल कठिन
 सब साधन सुगम न और उपाय ॥ मिटइ सकल
 दुख जौ करुणा करि मातु लेई अपनाय ॥
 अति दुस्तर भवसागर तरिबो कमला भजन
 विहाय ॥ काशी सेई भजहु हरि बनिता जो

त्रिभुवन की माय ॥ ७४ ॥

कवन तोरि गति होई हो गये यम के
सदन में ॥ किये न दे--विपद प्रीति हो भूले
विषयन में ॥ निति बीतति तोरि आयु हो प्रति
दिन छनछन में ॥ जगदंश पद नेह हो धारे
नहिं मन में ॥ ठगन बनाये धाम हो मूरख
तरे मन में ॥ विषय संग दुख मूल हो सुख दे
विभजन में ॥ कलियुग सिधि नहिं होय हो
तपो व्रत साधन में ॥ काशी समान अपर
नहिं हो गतिदा त्रिभुवन में ॥ ७५ ॥

कजरी खेलति जहं हरि ललना । जलधि
सुता संग माधव भूलत ॥ सुरतिय हरखि भुलावै
पलना । हरि कमला छवि जबते निहारेउ देखे
बिनु छनहु पड़त कलना ॥ सांची प्रीति करहु
देवी पद । देवीजी को भावत कपट छलना ॥
देवी दर्शन बिनु नींद न आवति ॥ अखियन

कबहु पड़त पलना । मुक्ति हेतु माहि मंडल
दूदेउ ॥ काशी सम मुखद अपर थलना ॥७६॥

देखो कजरी खेलति हरिकी रनिया । घन
गरजत चपला बहु चमकत ॥ भूमकि भूमकि
बरसत पनिया । हरि पीताम्बर काछनि काछे ॥
गेरे मोतिन के हार विच विचमनिया ॥ सिंधु
सुता मृदुगात मनोहर । लाली चुनरी छवीली
अति छविबनिया । तीरथ जग मंह जदापि हजा-
रन । काशी सम कोउ नहिं सारी दुनिया ॥७७॥

पुनः ।

देखो देखोरी हिडोला भूलैं सिंधु लली ॥
मुख पंकज छवि नासा सुन्दर दशन लसत
जनु कुंद कली ॥ रतन जड़ित शिर क्रीट विश-
जत नागिनी मनहुं अलक अवली ॥ नाभी
सर शोभामृत पूरित वरनि न जाय सुभग
त्रिवली ॥ मणिमय खंभ पाट की डोरी । हरखि

हिडोलन भूलावहि अली । काशी सेई भजन
को ॥ भव तरिवे को उपाय भली ॥७८॥

पुनः ।

कमला हरि आजु मचाई कजरी ॥ सुरगन
सकल विष्णु संग सोहत । लछ्मी संग सुर
तिय सगरी ॥ केसर अतर गुलाब कीच तिय
डारहिं सुरन पर भरि गगरी ॥ सुर बनिता
मिलि कजरी गावति । विबुध बजावहिं मुदित
खंजरी ॥ हरितन सजल जलद सम सोभित ॥
कमला तन जनु चमकति विजुरी ॥ भजन
करहु पद हरि प्यारी के ॥ काशी शिव शिव
शंकर नगरी ॥ ७९ ॥

॥ पुनः ॥

देखो जलधि सुताहरि खेलै कजरी ॥
पीतांबर हरि अंग विराजत । कमला तन सोहे
ललित चुनरी ॥ गावत किन्नर नाचै अपहरा

बरसत घन भिमिभिमि लाई भरी ॥ देविभजन
 विनु हे नर मूरख । जनम जनम तोरि नहि
 सुधरी ॥ अवरि बार भलि अवसर पाये काशी
 भजु नित्यानन्दकरी ॥ ८० ॥

॥ मलार ॥

पथिक सुनिलीजो बचन हमारे ॥ जनम
 जनम की तोरि कमाई सो सब हाथ तिहारे ॥
 ठग अनेक तेरे संग लागे लूटत सांझ सकारे ॥
 स्वास रतन छन छन मंह सोहत हिय मंह
 कछु न विचारे ॥ ठगहि नहीं पहिचाने मूरख
 निज धन नहीं संभारे ॥ जो चाहत बचिवो यहि
 अवसर बुधि विवेक हिय धारे ॥ काशी सेइ
 भजहु कमला को सेवक जाहि पियारे ॥ ८१ ॥

॥ सोरठ ॥

मोहि भरोसे रमाजी को एक ॥ माया को
 आवरन कठिन अति लई विवेकहि छेक ॥ निज

स्वरूप नहि परत लखाई कानि जतन अनेक ॥
 कर्म विवस लहि मोह जगत मह लीन्हे जनम
 कितेक ॥ भगवति भजन बिना हो दुख भो-
 गत सुख पावत नहि नैक ॥ नहीं तप जोग
 नहीं व्रत सजम नहि बुधि विमल विवेक ॥
 काशी सेइ भजिये कमला पद इह हमारे
 टेक ॥ ८२ ॥

॥ पुनः ॥

मोहि सदा कमला की आस ॥ अखिल
 विश्वसचराचर जहँलुगि जासु जो सुनिमेख वि-
 लास ॥ भजहि जासु पद कमल निरन्तर विधि
 हरि नारद व्यास ॥ वहति वयारि जाहि के प्रेरे
 वरखत जलद अकास ॥ चलत भानु भय मानि
 जासुनभ ध्यावत शिव कैलास ॥ हरि प्यारी
 त्रिभुवन की जननी यम डरपत जेहि त्रास ॥
 ताहि विसारि विषय मद माते कैसे छुटै भव

फाँस ॥ धारिय तासु अनन्य प्रीति सुनि तासु
चरित इतिहाँस ॥ कमला चरण कमल भजिये
करि काशी धाम निवास ॥ ८३ ॥

॥ राग वसंत ॥

सेइये सप्रेम हरि प्रिया माय ॥ लहि शुभग
दुरलभ मनुज काय ॥ प्रभुता लहेउ हरि जाहि
पाय ॥ भव तरहि मुनिगन सुजस गाय ॥ अतु-
लित प्रताप महिमा अनंत ॥ वेदहु नहि पाये
आदि अंत ॥ ध्यावहि सदा जेहि विमल संत ॥
जोगिन्द्र हियजो निति वसंत ॥ वैकुण्ठ धाम
जाको विलास ॥ जहँ रितुवसंत कर निति
निवास ॥ वसिये रमापद प्रीतिलाय ॥ काशी
मुखद शिव धाम आय ॥ ८४ ॥

॥ पुनः ॥

खेलति वसंत सागर कुमारि ॥ मुठि पीत
वसन भूषन सँवारि ॥ मणि पीत जडित भूषन

सुअंग ॥ गावति सुरतिय बाजत मृदंग ॥ छवि
 लखि लजहि कोटिन अनंग ॥ तन जोति मनहु
 कोटिन पतंग ॥ बीना पखावज सहित ताल ॥
 बाजत गावत गंधर्व बाल ॥ सुर गन नचत
 अति मोद पाय ॥ काशो शिवाहि डमरू
 बजाय ॥ ८५ ॥

॥ सबैया की डुमरी ॥

देखो आजु अली मोरे सिन्धु लली नन्दन
 वन ते चलि आवति है ॥ हरि हाथगहे कर कंज
 लिये गति मंद गयंद लजावति है ॥ लखिरूप
 अनूप विबुध वनिता छवि अतुल सराहिं बता-
 वति है ॥ महिमा गुन रूप बखानि न जाय सर-
 स्वाति पार न पावति है ॥ योगी हिय ध्यान
 लगाय लखैं श्रुति सिन्धु सुता गुन गावति है ॥
 कमला पद पंकज भक्ति सदा कलि पाप कलाप
 नसावनि है ॥ जिनकी माया सचराचर को निज

कर तल माहि नचावति है ॥ भजिये कमला
पद पंकज जो काशी महँ मुक्ति लुटावति हैं ॥८६॥

लखि सिन्धु सुता गुण रूप सदा मेरे मनमें
अति भावतु हैं ॥ बैठी वर रतन सिंघासन पर
करिवर सित चारि अन्हावतु हैं ॥ हरि और
निहारि कटाक्ष करै माधव लखि प्रीति बढ़ावतु हैं ॥
सुर कंचन थार लिये करमें करि आगति शुभ
गुन गावतु हैं ॥ चतुरानन श्रीमहिमा बरनै
पंचानन चवर दुगवतु हैं ॥ सुरपति अपने कर
छत्र गहे हरि निज कर पान खावतु हैं ॥
सलिलेश लिये जलकी भागि शशि ठोढ़े मुकुर
देखावतु हैं ॥ कज्जल को अनल गहेकर में
मारुतगन व्यजन डोलावतु हैं ॥ नेवछावर
करि मुकुता मनि को धन पति बहुकनक लुटा-
वतु हैं ॥ सनकादि निहारि शरीर विसारिमा
हरिके गुन गावतु हैं ॥ महिमा अतुलित नहिं

जाय बखानि गनेशहु पार न पावतु हैं ॥ काशी
भजु सिंधु सुता पद को जेहिं सबसुर सीस-
नवावतु हैं ॥ ८७ ॥

॥ हुमरी ॥

हरि प्यारी पद पदुम सदा मन पागत काहे
नही रे । सोवत सारी रैनि गवावत जागत काहे
नहि रे ॥ जगकानन धन हाथ लिये भय
लागत काहे नँहिरे ॥ संग ठगन को अति दुख-
दाई त्यागत काहे नँहिरे ॥ रमा भक्ति सेवक
कलपद्रुम अनुगत काहे नहि रे ॥ जगत निर-
न्तर कमलाको शरणागत काहे नँहिरे ॥
काशी रमाजी के चरन भक्ति वर मांगत काहे-
नहिरे ॥ ८८ ॥

हे मनकाहे गंवावै उमिरिया ॥ विषय भोग
ते नाहि अधाने गाये न देवी हुनरिया ॥ आपुहि
अपने गरे लगाये माया मोह फसरिया ॥ चारि

दिना को जग नइहर यह बहुरि उहै ससुररिया॥
 सतगुर पूछ खोजि पथिक को बूझहु पिया
 मिलने को उहरिया ॥ काम क्रोध जार सँग
 लागे तोहि बनावै पतुरिया ॥ तिनहि निरखि
 जिनि नैनके कोरहु जो कुलवंती बहुरिया ॥
 जो कुल कानि राखिबो चाहे आढे धरम चद-
 रिया ॥ साची प्रीति राखि प्रीति सो माहि वसु
 निति काशी नगरिया ॥ ८१ ॥

॥ पुनः ॥

देखो सिंधुसुता की छवि अनूप आजु मोरे
 हिय वसि गई हो ॥ चन्द्रवदनि मृगलोचनि
 कमला अधर ललित नाशा सुठि विमला
 अलक स्याम कुन्तल मन महुँ नागिनि जनु
 ढसि गई हो ॥ रूप राशि सचराचर जननी
 सुर पालिनि दानव गण हननी वेणी जनु
 छवि जाल चित्त हरिनी मेरि फंसि गई हो ॥

शुभ भुज चारि उभय कर पंकज अपर जुगल
 वर अभय तापहर मुख शशिकान्ति निरखि मन
 को सब कसके निकसि गइहो ॥ अमृत कलश
 अन्हवावत करि वर चमरं छत्र गहे विधि शंकर
 आरति करति विबुध जुवाति सब परम हुलसि
 गई हो ॥ कलिजुग होय सकै नहि तप व्रत
 केवल देवी भजे पाव गति काशी कमला आपु
 मुक्ति को देति निवसि गई हो ॥ ६० ॥

॥ मलार हिंडोला ॥

कमला भूलति रंगहि हिंडोरै ॥ मणि मय
 खंभ कनक मय भूला गाँहि सखि चहु ओरै ॥
 मुदित भुलावत नारायन प्रभु गहि रेशम की
 डोरै ॥ घन गरजत दामिनी आति चमकति
 उपवन नाचाहि मोरै ॥ शीतल मंद सुगंध पवन
 अति पिक दादुर कर शोरै ॥ ब्रह्मादिक सुरगन
 सब ठाढ़े हरि वनिताहि निहोरै ॥ बूंद फुहार

वहति पुरैया मंदाकिनी हिलोरै ॥ निरखि रूप
समुद्र सुता को सुरतिगलजितून तौरै ॥ काशी
भजिये ताहि कमला को जेहि हरि हर कर
जेरै ॥ ६१ ॥

देविविनु कोउ नहि अहै काम ॥ सुत पितु
मातु कुटुंब जग जेते संबन्धी धन वाम ॥
अंतकाल कोई काम न अहै जब चलिहै जम
धाम ॥ जग मँह पतित अधम खल जेते में
तिन मँह सरनाम ॥ छमिहै सोई अपराध हमारे
कमला सिन्धु लल्लाम ॥ तरे अनेक पतित प्राति
जुग मँह भजि जगदम्बा नाम ॥ काशी अपर
सबहि विसरायो भयेउ रमाको गुल्लाम ॥ ६२ ॥

कस न द्रवहु सुनि विनय हमारी ॥ कमला
छीर समुद्र कुमारी ॥ मधुकैटभ आति प्रबल
असुर बरणाई समर विधिहि प्रचारी ॥ विनती
विधिकी सुनिजग जननी प्रगटिता सुभय सकल

निवारी ॥ महिषासुर अमरशक्ति जीती तब सुर-
 गन जग मातु हँकारी ॥ सहि न सकी निज
 दासन को दुख बधी धारि अवतार हयारी ॥
 दानव शुभ निशुंभ विदित जग रक्त बीज सुर
 मुनि दुख कारी ॥ चंडमुंड आदि खल जेते
 सुर हित लागि चाँडिका मारी ॥ भूप सुरथ रिपु
 भय अति पीडित जगदम्बा कह जबहिं पुकारी ॥
 लहि बरदान जीति बैरी गन पाइ राज सुख
 भयेउ सुखारी ॥ नृपति सुदर्शन कह जब घेरे
 रिपु समाज सेनां दल भारी ॥ जन सहायहित
 आपुहि प्रगटी ताहि राखि रिपु गन संघारी ॥
 अब विलंब कबहु नहिं लाई दासन जब सुधि
 तोरि सुधारी ॥ हम आजु कहां विलम्बी जग
 जननी मनहु पाछिली बानि विसारी ॥ नहि
 विलंब कर अवसर जननी करहु कृपा ममदशा
 निहारी ॥ काशि प्रसाद दास चरननका को
 राखत केवल आस तेहारी ॥ १३ ॥

नरतन चिंतामनि पाई ॥ मूरख क्यों देत गवाई
जबते श्रीपद विसराई ॥ नरतन भीति तबहिं से
छाई ॥ खेलत बीती लडिकाई ॥ तरुणी लूटी
तरुनाई ॥ अब पहुंची आय बुढाई ॥ सब गात
गये सिथिलाई नैननते नाहि सुभाई ॥ श्रव-
नन नहिं बैन सुनाई ॥ विषया विषमाहिं लुभाई ॥
कमला पद भक्ति बिहाई ॥ जगमें अति प्रीति
बढाई ॥ भव बन्धन माहि बँधाई ॥ हिय दर्पन
लागी काई ॥ कैसे निज रूप लखाई ॥ माँजै
गुर पद रज लाई ॥ तब आत्म रूप दिखाई ॥
काशी कमला भजुभाई ॥ जहँ पतितहु शंभु
वनाई ॥ १४ ॥

श्रीविन्धवासिनी महारानी की जन्म बधाइ
मंगल ॥ विन्धवासिनी मातु नन्दगृह अव-
तरी ॥ आजु जगतके सकल शोक संकठ
हरी ॥ तिथि अष्टमि बुधवार मास भादों

सुखद ॥ परम सोहावन गितु नभ महँ छाये
 जलद ॥ अरधरात्रिके समय नक्षत्रशुभरोहिनी ॥
 अजा मूल प्रकृती जनमी जग मोहिनी ॥ सुर
 मुनि हित भई प्रगट जसोदा नन्दनी ॥ अखि-
 लेश्वरि जगदंब सुगसुर वन्दनी ॥ कंस बकासुर
 आदि असुर वध कारिणी ॥ हरि स्थाहित आपु
 प्रगटि जग तारिणी ॥ कंसहि भावी भाषि
 गगन मारग चली ॥ कहहिं सकल सुमुनि
 जै जै जमुदा लली ॥ विधाचल रमणीय परम
 पावन शिखर ॥ तहाँ करी अस्थान अखिल
 संतापहर ॥ विन्धेश्वरि गोविन्द सहोदरि सुन्दरी ॥
 सुमिरन नासति पाप मंजु मंगल करी ॥ जे
 यह मंगल ललित प्रीति युत गावहीं ॥ काशी
 देवि कृपा उत्तम गति पावहीं ॥ १५ ॥

सोहति उमा उमापति जोरी ॥ रजताचल
 दुति शंभु श्वेत तन गिरिजा कनक लता छवि

गोरी ॥ गंग फुहार भरत इत भरना श्रीफल
 उतव छोज फरोरी ॥ वाघंवर शिव शंकर पहिरे
 ललित बसन गिरिजाजकिशोरी ॥ जुगल भाल
 शशि खंड प्रकाशित तीनि तीनि दृग सुखद
 लखोरी ॥ भस्म त्रिपुड भाल गिरिजापति उमा
 लिलार विराजति रोरी ॥ मृग वर अभय परसु
 शंकर कर पारवती कर कमल लसोरी ॥ जोरी
 अति कमनीय मनोहर निरखि इहै विनवों कर
 जोरी ॥ ध्यान परम कल्यान हेत यह काशी के
 हिय धाम वसोरी ॥ १६ ॥

सागर नन्दनि की बलिहारी ॥ रतन सिंघा-
 सन कमलासन पर बैठी जलधि कुमारी ॥
 आदि शक्ति ब्रह्मादिक जननी भक्तिहेतु वपु-
 धारी ॥ चारि भुजा चारिहु फल दाता जुग
 पंकज भय हारी ॥ वरदायक अति रुचिर
 मनोहर शरणागत सुखकारी ॥ नखसिख मणि

मय भूषन भूषित दिपित कनक मय सारी ॥
 सीस रतनको क्रीट विराजत अन्हवावत गज-
 चारी ॥ दीर्घ नयन कटाक्ष विलोकित मोहतदेव
 मुरारी ॥ हरि निज हाथनि पान खवावत विधि
 हर चामर दारी ॥ जगदम्बा समान त्रिभुवन
 मैंह को जीवन हितकारी ॥ काशी सागर मुता
 वनावति सब जीवहिं त्रिपुरारी ॥ ६७ ॥

हरि बनिता पद प्रीतिहि ठानो ॥ मैं बालक
 अथाह भव सागर निरखि अपाने डरानों ॥
 मातु समुद्र मुता कहँ परि हरि अपर हितू नहि
 जानों ॥ जदपि अधम आलसी भजन को
 विषय भोग लपटानो ॥ तदपि भरोस मोहि
 कमला को अपर नहीं मनमानों ॥ औरन सो
 कछु काम न मोकहँ सपनहुं नहिं मन आनो ॥
 काशी केवल हरि ललना कर बिनु दामहीं
 विकानों ॥ ६८ ॥

सुमिरौं सेवक तारिणि तारा ॥ अमित
 प्रभाव प्रगट जग जाको महिमा रुचिर उदारा ॥
 नारदादि मुनि गुन गनिहारे पायउ वेद न पारा ॥
 शिव बिरंचि नहिं सकहि बखानी भगवति चरित
 अपारा ॥ जगदम्बा पद भजन जगत महुँ अघ
 काटन को आश ॥ जेते पामर पतितहिं तारि
 तेते नभ नहिं तारा ॥ अधम उधारन हित
 काशी महुँ बहति मुक्ति की धारा ॥ ६६ ॥

सुमिरौं भुवनेशी महरानी ॥ जासु प्रताप
 विदित त्रिभुवन महुँ महिमा वेद बखानी ॥
 आदि जोति ब्रह्मादिक जननी भुवनेश्वर पट-
 रानी ॥ अति उत्तम मणि दीप जासु सुठि परम
 सुखद रजधानी ॥ ब्रह्मासन पर सुदित विराजति
 भुवनेश्वरि कल्पानी ॥ उदित भानु दुति मुख
 पंकज छवि अँखिया कहु अलसानी ॥ पाशां-
 कुश कर जुगल उभय कर अभय रुचिर वर-

दानी ॥ हौं तो कुटिल पतित मोकहँ जग दास ते
 हारो जानी ॥ कृपा करहु सेवक काशी पर
 चरन दास निज मानी ॥ १०० ॥

धूमावतीजीका भजन राग मलार ।

बन्दौं धूमावति शिव वामा ॥ टेक ॥ नील
 बसन भूषन तन सोहत मनहु सजल घन
 स्यामा ॥ धूम्र वरन पति भैरव राजित काल
 राज अभिरामा ॥ काक पताक ध्वजा परशोभित
 रूप परम छवि धामा ॥ रथ मैंह काक लगे हैं
 जोरी शुभपूरइ जनमन कामा ॥ सुमिरहिं जासु
 प्रताप विबुधगन मुनिवर बर वसुजामा ॥ काशी
 भजि भगवति धूमावति लहत परम विश्रामा ॥ १०१ ॥

बगलामुखीका पद ।

भजुमन श्री बगला महरानी ॥ टेक ॥ पीत
 बसन मणि पीत विभूषन पीत माल सुख दानी
 पीत तिलक अनुलेपन पीतहिं छवि नहिं

जाति बखानी ॥ निज दासन के रिपुको वा-
चा स्तभण करति भवानी ॥ बगलामुखी मातु
करुणा मइ अमित रूप गुन खानी ॥ अतुल
प्रभाव जासु बरनत सुर मुनिवर सजन ज्ञानी ॥
काशी किंकर तव चरनन को पालहु निज जन
जानी ॥ १०२ ॥

श्रीभैरवी महारानी का भजन ।

करु मन भैरवी गुन गाना ॥ टेक ॥ भैरव
संग विराजति जननी करति सदा मधु पाना ॥
कर कपाल दंपति के सोहत करति बिहार
मसाना ॥ मृतक मास को भोग लगावत सुर
ति करति विधिं नाना ॥ जोगिनि नाचहिं
किन्नर गावहिं लहि आनंद महाना ॥ साधक
जन कहँ सिद्धि देति जो महिमा अगम बखाना
चटुक नाथ भैरवि पद भजिकै कौशिल होहु
निरवाना ॥ १०३ ॥

श्रीमातंगी जीका भजन ।

भजुमन मातंगी मुदकरणी ॥ टेक ॥ जाहि
सदा योगी हिय ध्यावहिं सकल अमंगल हर-
णी ॥ केवल जासुनाम पतितन कहँ भव तरिवे
की तरणी ॥ महिमा जासु अनन्त अलोकिक
वेद सकै नहिं बरणी ॥ आदि शक्ति त्रिभुवन
की कारणि श्रीशंकर की घरणी ॥ अखिल
चराचर हृदय निवासिनि मनमतंग वश करणी ॥
निति काशी मँह मुक्ति लुटावति सुरसरि तट
मणि करणी ॥ १०४ ॥

श्रीछिन्नमस्तिकाजीका भजन राग मल्लार ।

नहिं छिन्नासम कोउ हितकरि ॥ टेक ॥
विपिन विहार करत सखियनको तृषालगी जब
भारी ॥ लखहु दया त्रिभुवन जननी की निज
शिर आपु उतारी ॥ निज ग्रीवाते अमृत धार
जब आपुहि तीनि निसारी ॥ एक आपने मुख
मँह लीन्ही अपर जुगल सखि प्यारी ॥ ऐसी

दया सुनी नहि कबहुं छिन्नाकी बलिहारी ॥
 अस दयालु जननी कैह परि हरि अपराहि
 भजहिं अनारी ॥ प्रणत पालिनी सुजस विदित
 जग जन दुख पाप प्रहारी ॥ काशी तव शरणा
 गत जननी पालहु दोष निवारी ॥ १०५ ॥
 डुमरी ।

काहे अलसानी कमला महरानी ॥ टेक ॥
 जब जब दासन तोहिं पुकारत कबहु विलंब न
 ठानी ॥ मोहिं पुकारत बहु दिन बीते मम सुधि
 काहे भुलानी ॥ महिमा अतुल बखानत थाके
 सुर नर मुनि विज्ञानी ॥ विधि हरिहर गनपति
 सुर नायक सेवहिं हरि पटरानी ॥ करहु कृपा
 मो पर हरि प्यारी दास आपनो जानी ॥
 काशी कीट पतंगहु पावत जोगति जाचत
 ज्ञानी ॥ १०६ ॥

इति श्रीदेवी भजन मुक्तावली काशीप्रसाद विरचिता समाप्ता
 शुभमस्तु श्रीहरिवल्लभा लक्ष्म्यार्पणमस्तु ॥ भाद्र कृष्ण
 नवम्यां गुरुवासरे सम्बत् १९१५ ॥

दोहा ।

ललित भजन मुक्तावली, नाशिनी सकल बिखाद
रची रमापद प्रीति हित, जनकाशी परसाद॥१॥
किये कंठ रीझै अवसि क्षीर समुद्र कुमारि ।
अस बिचारि हिय कंठ में सज्जन राखैं धारि॥२॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

ठुमरी ।

उमिरिया तेरी दिन • दिन बीती जात ॥
बाल युवा दोउ वृथा विताये सिथिल भये अब
गात ॥ केश श्वेत भये आइ बुढाई अबहुँ न
सोचत तात ॥ छन छन में तेरि आयु घटति
है नहिं सुमिरत जग मात ॥ सोवत सारी रैन
बीति गई होन चहत अब प्रात जग महँ
जिनहिं आपनों जानत सुत दास पितु भ्रात ॥
अन्त समय कोउ काम न ऐहैं जैहैं तुही पछ-
तात ॥ अधम उधारनि जगदम्बा बिनु हित नहि

अपर लखात ॥ काशी सेइ भजो हरि बनिता
मानि हमारी बात ॥ १ ॥

ठुमरी ।

भजन बिनु काहेको जनम गँवाये ॥ जन-
मत मरत बहुत दिन बीते अब मानुख तन पाये ॥
खान पान महुँ बहुरि लुभाने नहिं देवी गुन
गाये ॥ यह तन रंग महल पीतम को ता महुँ
जबते आये ॥ सेज सँवारत रैनि सिरानी तनिक-
हुं सुख नहिं पाये ॥ थाके चलत अगम मारग
महुँ अघको भार उठाये ॥ नर तन अति सुख
धामहु लहि तुम छन भरि नहिं सुसताये ॥
त्याग भक्ति सुधा मृत मूरख विषयन माँहि
लुभाये ॥ बिनु काशी गति कैसे पावै जे नर
पतित कहाये ॥ २ ॥

पुनः ।

कबहुं नहिं जगदम्बा गुन गाये ॥ रतन
अमोल स्वास निज मूरख कौडी के मोल

गँवाये ॥ माया स्वामिनि पराशक्ति जो तामु
चरन नहिं ध्याये ॥ सोई पंडित सोइ विज्ञानी
श्रीपद प्रीति दृढाये ॥ माया बंधन ते किमि
छूटै बिनु जगजननी छोडाये ॥ सदा भजन
करिये भगवति के सेवक जाहिं सोहाये ॥ काशी
जो गति मुनिवर जाचत कीट पतंगहुं पाये ॥३॥

देवी भजु भाई रे तैं देवी भजु भाई रे ॥
क्या जग जाल रहत अरुभाईरे ॥ सुत पितु
भ्रात परिवार लोगाईरे ॥ अंत तेरे संग प्यारे कोई
नहिं जाइ रे ॥ बीती लड़िकाई तेरी गई तरुणाई
रे ॥ अजहूं न भजे भवानी आइ है बुढाईरे ॥
आँखिन सुभाई नहि श्रवन सुनाईरे पग थह-
राई गात गई मुरभाईरे ॥ तजि कदराईरे ॥
काशी बिनु पतितम नहिं गति पाईरे ॥ ४ ॥

सखि मोहिं वह छबि विसरति नाहीं ॥
सिंधु किशोरी संग रमापति रंग महलके माहीं ॥

फूलन रचित सेज पर पौढे दंपति गहि गल-
बाँही ॥ हाँस विलास करत आनंद भरि पानकी
बीड़ी खाही ॥ काशी निहारि वारि तनकी सुधि
बार बार बलि जाही ॥ ५ ॥

आजु हम देखी अनोखी भाँकी ॥ नन्दन
बन बिहरत छवि अतुलित हरि संग सिंधु सुता
की ॥ फूलनि के भूषन सब पहिरे छाया कल्प
लताकी ॥ बाँह एक हरि काँधे धरि चितवति
वनि बाँकी ॥ लखि मोहत माधव मन छन
छन दुति अनूप कमलाकी ॥ कांति निरखि
कोटिन शशि लाजत बदन सरोज रमाकी होति
मंद हरि तेज बिलोकत प्रभाकोटि सविताकी ॥
सिंधु लली गुनरूप बखानत शेषहु की मति
थाकी ॥ काशी बरनि सकै छवि कैसे हरि
प्यारी पदमाकी ॥ ६ ॥

देखो सखि राधा चितवति बाँकी पल, पल

मह मोहन मन मोहति डीठि मोहनी ताकी ॥
 लोक लाज कुल कानि गवाई डर नाहिं मातु
 पिता की ॥ सुखद कदम तर ठाढी निरखाति
 छहियां कुंज लताकी ॥ मदन गोपाल प्रीति
 रंग राती तनया वृष सविताकी ॥ जासु अमित
 गुन रूप बखानत शारद कीं बुधि थाकी ॥
 काशी के हिय देति परम सुख छवि वृष भानु
 सुता की ॥ ७ ॥

देखो सखि छवि अपार राधा की ॥ नील
 बरन सारी तन पहिरै सजल जलद उपमा की-
 चमकत करन फूल कानन महुँ मनहुँ दमक
 चपला की ॥ बगपाती जनु परम मनोहर गरे
 माल मुकुता की ॥ हरि चात्रिक अनंद ल-
 हत लखि छवि वृष भानु सुता की ॥ जाहिं
 निहारत विसरिजात सब सुधि बुधि नंद लला
 की ॥ तासु रूप बरनै किमि काशी महिमा
 अतुलित जाकी ॥ ८ ॥

लाखि मुख छवि क्षीर समुद्र लली को ॥
 अब न आँखितर आवत कोऊ सब जग लागत
 फीको ॥ कोटि चन्द्र सम कांति मनोहर माँग
 लसत मणि टीका ॥ श्रवन रतन ताटक विराजत
 नासा वेशर नीको ॥ मानिक क्रीट सीसपर राजित
 उपमा नहिं चोटीको ॥ बर अरु अभय उभय कर
 पंकज करिकर कलश अमीको ॥ कनक
 बसन नखसिख मनिभूषन कँठहार मोती को ॥
 मृदु मुसुकानि दृगनके कारनि मन मोहति
 निजपीको ॥ अखिल चराचर पालिनि लक्ष्मी
 प्राणाधिक सबहीको ॥ भुक्तिमुक्ति दाइनि हरि
 प्यारी जीवन जन काशीको ॥१॥

सुनहु सुदर्शन यह प्रण मेरो ॥ जब जब
 सुरमुनि ममप्रिय सेवक आरत मोकह टेरो ॥
 सहि न सकौं दुखनिज भक्तन को संकट हरति
 घनेरो ॥ खलदल प्रबल निर्बल जाने तोहि

काल विवश जब घेरो ॥ तब सहाय हित आतुर
 धाई समुझि भक्ति दृढतेरो ॥ निज प्रन प्रतिपाल-
 हु जगजननी मम करनी जनिहेरो ॥ काशी
 प्रसादाहि आस तेहारी तुव चरनन को चेरो ॥१०॥

साखि सैन समैया सिन्धु सुता को फूलन
 सेज दसावोरी ॥ अतर गुलाब पान की बीड़ी
 मधु मेवा फल लावोरी ॥ कुंद गुलाब चमेली
 के रचि गुच्छा हार बनावोरी ॥ फूलनि के भूपन
 सब रचिकै स्वामिनि तन पहिरावोरी ॥ चोवा
 चंदन मृगमद केशर अनुलेपनहि लगावोरी ॥
 साजि सिंगार आंजि दृग अंजन बाहर खगरि
 जनावोरी ॥ दंपति कँह पौढाई सेजपर व्यंजन
 विचित्र डोलावोरी ॥ छविनिहारि वारि तन
 मन सुधि मनकी तपनि बुझावोरी ॥ काशी
 सेइरमा हरि के पद हरि प्यारी गुन गावोरी
 ॥ ११ ॥ चंच ।

रूप छवि धाम अमिराम जन काम तरु
 शील गुन ग्राम सागर कुमारी ॥ सीसमणि
 क्रीट जगमगात कुंडल श्रवन कनक मय लसति
 तन ललित सारी ॥ जुगल करकंजु जुग मंजु
 पंकज धरे अपर वरदान भवभय प्रहारी ॥ क-
 मल आसीन कटि छीन कुचपीन सुठि श्वेत गज
 चारि कर कलश धारी ॥ मीन मृग खंज लजि
 जाहि दृग कंज लखि कौटि कंदर्प प्रति अंग-
 वारी ॥ दिपित तन जोति लखि मद उद्योति
 रविहोति छविहीन शशि मुख निहारी ॥ धारि हिय
 दरद निज विरद पाली सदा अमित खल पतित
 जगदंब तारी ॥ विनय काशी करत जोरि कर
 नाइ शिर हरहु दुख हरनि मम दुरित भारी ॥१२॥

॥ ठुमरी ॥

सोहागिनि पुनि पछतैहैरी तजु जोवन
 अभिमान ॥ पति अनुकूल समीप तेहोर तामु

करति अपमान ॥ सोवत सारी रैन बितावत
 चाहत होन बिहान ॥ संगति कामादिक पापिन
 की नाहक गहति अजान ॥ ए सब तोहि वि-
 गार विगारे तोहि नहीं पहिचान मुखद सेज
 नरतन को पाये जो न लहै प्रियप्रान ॥ भोरभये
 पुनि तोहि न पैहैं बचन हमारे मान ॥ प्राण
 धार पिया प्यारे सो उचित न मान गुमान ॥
 काशी मुक्ति धामलहि सब ले पावत पद नि-
 र्वान ॥ १३ ॥

पियागृह किमिमुख पै हरी दुलहिनि त्यागु
 गुमान ॥ करु उपाय प्रीतम मिलाप की दुख
 नहिं बिरह समान ॥ यह नैहर चारि दिना
 को पुनि प्रीतम घर जान ॥ वृथा कहा खेलति
 गुडियनि सँग चेतत नाहिं अजान ॥ रसिक
 शिरोमनि नाह तेहारो जानत सकल जहान ॥
 ताहि न भावत कपट कुटिलता दंभलोभ अभि-

मान ॥ यहि कलिकाल कठिन जप तप ब्रूत
सुगम उपायन आन ॥ काशी नारायण प्यारी
भजि जो चाहत कल्याण ॥ १४ ॥

पिय कैसे रिझै हैरी हे मन नारि अनारि ॥
चपल प्रकृति तेरी जीभ चटोरी अखियां बड़ी
भवारि ॥ चतुर सुजान रसिक तव लालन तू
बडि मालिन गँवारि ॥ अंजन ज्ञान आंजि हिय
नैना धरम विभूषन धारि ॥ चटकीली पिय प्रीति
रंगीली चुनरी ललित सँवारि ॥ प्रीति अनन्य
भवानी को गहि कपट कुचाल निवारि ॥ काशी
सेइ भजै निशि बासर भगवति जलधि कु-
मारि ॥ १५ ॥

मातु छमिये करि करुणा हो मेरे अपराध
अपार ॥ विश्वव्यापिनी तोहि न जानेउँ तीरथ
फिरेउँ हजार ॥ वानीपरा जाहि श्रुति गावति
अस्तुति करेउँ उचार ॥ मन बुधि जेहि अनु-

मानि सके नहिं मुनिगन मानेहार ॥ तासुरूप
बहु विधि हिय ध्यायउं असो मूढ़ गँवार ॥ अ-
जा अजन्मा वेद कहत जेहि महिमा जासु
उदार ॥ निज अज्ञान विवशताहू कर मानेउ
बहु अवतार ॥ सब पापहि ठहरते जो जो हम
कीन्हे धरम विचार ॥ काशी हरि प्यारी बिनु
मेरो कवन करे निस्तार ॥ १६ ॥

तुम बिनु मातु सुनैको मेरी ॥ अधम उधरिनी
नाम विदित तब सुनि आयउ शरणागत तेरी ॥
खल पामर नर महापातकी परम कुचाल कुटिल
जगजोरी ॥ तिन्ह पति तन मैंह महापतित मैं
मोहि तारे तब कीर्ति घनेरी ॥ सुयश ख्यात जग
मैंह जननी को सुत करनी कबँहू नहिं हेरी ॥
याहि हेतु तब चरण लुभानो अपर सबहिते नि-
ज मुख फेरी ॥ देखत मोहि बहुत दिन बीते का-
रण कवन लगी बड़ी देरी ॥ जो गति योगी
मुनि गन जाचत काशी कीट पतंग लहेरी ॥ १७ ॥

छमिये मातु अपराध हमारी ॥ तीरथ विविध
 फिरेउ तोहि हेरत जग व्यापिनि तब नाम वि-
 सारो ॥ बानीपरा वेद तोहि भाषत मैं मूरख
 अस्तुतिहि उचारो ॥ मन बुधि जाकर रूप
 अलौकिक हिय अनुमान करत जेहि हारो ॥
 ताहि विरूपा परा शक्ति कर ध्यान आपने हृदय
 सुधारो ॥ अजा अनामिनि मातु अजन्मा ताको
 जनम अनेक बिचारो ॥ काशी सब अपराधहि
 कीन्हे लज्जित देखत शरण तेहारो ॥ १८ ॥

रूप शीलगुन धाम जलधि तनया छबि
 आजु निहारी री ॥ कोटि चन्द्र छबि कोटि नर
 विछविसोहति अति हरि प्यारीरी नंदन बन वि-
 हरत हरि कर गहि निज कर सिंधु कुमारीरी ॥
 बांकी चितवनि लखि कमला की मोहि रहे बन
 वारीरी ॥ फूल नर चित मुकुट शिर सोहत तन
 सारी जस्तारीरी ॥ तामे फूल की अति सुन्दर

लागी वेल किनारी री ॥ फूलनि की सुठि बनी
 कंचुकी लागी बकुल निवारी री ॥ सुन्दरता के
 फूलनि मानो फूलि रही फुलवारी री ॥ जासु
 अधीन चराचर स्वामी श्रीवैकुण्ठ विहारी री ॥ जग-
 दम्बा परब्रह्म रूपिनी कमला की बलिहारी री ॥
 महिमा जासु अनन्त बखानत शारद की मति-
 हारी री ॥ काशी हरखि निरखि वा छवि को तन
 मन मुधि बुधवारी री ॥ १६ ॥

ललित समुद्र लली छवि आजु अली
 भरि नैन निहारी री ॥ रतन सिंघासन कमला-
 सनपर अति सोहति हरि प्यारी री ॥ जुग कर
 कमल अभय वर सुन्दर परम रुचिर भुजचारी री ।
 अंजन अंजित दृगकंजन परमृग खंजन गन वा-
 री री । अन्हवावहि गजचारि अमृत भरि कनक क-
 लश करधारी री ॥ जगमगात रतनन को भूषन
 दिपितताश की सारी री ॥ जानि न जाय मातु

केहि कारण मेरी सुरति विसारी री ॥ काशी ते-
रोइ दास कहावत राखत आस तेहारी री ॥ २० ॥

रे बटोहिया तोहि कहौं समुझाय । ठग अ-
नेक तेरे संग लागे हैं सुत दारा पितुमाय ॥
स्तन अमोल स्वांस तेरो लूटहि भूठी प्रीति दे-
खाय ॥ ए तेरे सँग दगा करेंगे मोहकी फांसी
लगाय ॥ अब लों इनहिं नहीं पहिचाने पंथहु
गयेउ हेराय ॥ सुगम पंथ सत गुरुते प्रच्छहु
निज गृह पहुंचौ जाय ॥ काशी पतितहु मुक्ति
लहत हैं जगदंबा गुनगाय ॥ २१ ॥

भगवति कलिमल कलुष बिनाशिनि सुर-
सरि जन्हु कुमारी री ॥ पापताप संताप निवारिनि
गंगा की बलिहारी री ॥ दरस परस मंजन
अथ नासत सुरसरिता को वारी री ॥ सोऊजी
वहितारति जो सुरसरि लागि बहाति बयारी री ॥
मृग मद चर्चित जुगलपयोधर प्रात न्हाति नृप-

नरिरी ॥ सुरसरि परस प्रभाव होंहि ते मृग नन्दन
 बनचारी री ॥ गंगसलिलकण परसत पापिहु
 होत सुगति अधिकारी री ॥ चढि विमान कैलाश
 जातलहि सुरतिय चामरदारी री ॥ जदपि विबुध
 सरिता त्रिभुवन मँह सुरनर मुनि हितकारी री ॥
 मुक्ति प्रवाह तदपि काशी अति पामर खल बहु-
 तारी री ॥ २२ ॥

गंगा की बलिहारी मैं सुरसरिता की बलिहा-
 रीरी । जासु सलिल नर पान करत तजि देह होत
 त्रिपुरारीरी ॥ कलिमल असित दुरित पूरित खल
 पतित अनेक उधारीरी ॥ महिमा जासु निर-
 खि गंगाधर निज मस्तक पर धारीरी ॥ जदपि
 अखिल अधहारिनि सुरसरि पामर जन बहुतारी
 री ॥ तिन मँह मोहि नजानहु गंगा ममतारन
 बहुभारीरी ॥ तोहि गरब खलतारन को बड ता-
 रत कबहु न हारीरी ॥ मोहि उधारत जानि परेगी

करनी मोरि निहारीरी ॥ देखत मोहिं बहुत दिन
बीते काहे सुरति विसारीरी ॥ काशी मुक्ति त-
रंग निरखि तव निज मन सुधि बुधि वारीरी । २३ ।

सुनहु मातु भुवनेश्वर प्यारी । करुणा करि
यह विनय हमारी ॥ जैसे विविध पतित खल
पामर धारि दया जगजननि उधारी । तिन पतित-
न मैं मोहू जानिये करुणा करि अपराध विसारी ।
भुवनेशी मुख आवत ही जो देति निसंक भुवन
दशचारी । सुनिपुनि पाहि वचन जग जननी सकु-
चाति आपुहि ऋणी विचारी । जौ कृपालु जननी
मोहूं पर यहवर देहुदया हियधारी । काशी के
मानस पंकज मधि वसहू सदा हरि सिन्धु
कुमारी ॥ २४ ॥

धेयं सदा समुद्र सुता पाद पंकजं ॥१॥ मो-
हादि रोग नाशकरं दिव्य भेषजं । कल्याण हेतु-
मार्तिहरं भुक्ति मुक्तिदं ॥२॥ सेव्यं विरंचि शक्रशि

वैर्यस्य श्रीरजं । भक्त्यार्द्रविभूतिकरं धर्मकामदं ॥३॥
 यंसंयुतं सुचिन्ह शुभैर्पंकजादिभिर्वाणांकुशा-
 दिकं चापं चामरं धृतं ॥ काशी करोति सिन्धु मुते
 प्रार्थनामिदं । मह्यं प्रदेहि भक्ति रमे निश्चला-
 निजं ॥ २५ ॥

भजो श्रीसिन्धु कन्या को चरित जिसकी
 नियारी है । महा माया जगत माता रमा गोविन्द
 प्यारी है ॥१॥ जिसे जोगी सदाध्यावै जिसे मुनि
 ब्रह्म ठहरावै । निगम नहि अंत को पावै वही सा-
 गर कुमारी है ॥२॥ जगत को जिसने है सिर्जा
 वही कमला वही गिरिजा । भजो दिल में धरो
 धिर्जा बहुत पापी उधारी है । ३। रतन का क्रीट मिर
 सो है ललित छवि देखि हरि मो है । न मो है दूसरा
 को है अजब वह रूप धारी है ॥४॥ बिना उस विश्व
 जननी के अधम की कौन सुनता है । दया हिय
 धारि भक्तों को वही आनन्दकारी है ॥५॥ पतित जे

पाप के रागी बनावै तिन्ह को अविनासी । लु-
टावै मुक्ति को काशी वही कमला हमारी है ॥२६॥

समझा असल को जिसने उसको नकल
न भाया । सूरज के आगे तमका किसने निशान
पाया ॥१॥ दिलमें है देखा जिसने कमला की
जोति जगमग दुनिया में कोई उसके आंखों तले
न आया ॥२॥ ब्रह्मा से लेके जग में जितने हैं
जीव धारी । कोई नहीं है ऐसा मोहै न जिसको
माया ॥३॥ सोमाया उसकी चेरी कहता है वेद जि-
सको । मायेश्वरी भवानी कमला है विष्णुजाया । ४।
नारायणी को भजिये काया बचन से मन से ।
श्री सिन्धु कन्यका को कबही कपट न भाया ॥
५॥ अन्तर से वासना को विषयों के त्याग दीजै
दिल से विषै न छूटी तौ मूंड क्या मुड़ाया ॥६॥
काशी में बसके कीजै सद्भक्ति अम्बिका की ।
अब भी तो सोच भाई अब तक वृथा गवाया ॥२७॥

सिन्धु की किशोरि मातु मेरी सुधि लीजि-
 ये ॥१॥ सुरथसी समाधि ऐसीविधि की सी इन्द्र
 ऐसी भूपति सुदरशन सी वेगि खबरि लीजिये ॥२॥
 निदरि सुर समूह माय तेरे पदगहेउ आय वेगि
 है सहाय मातु अब न देर कीजिये ॥३॥ अपर देव
 ते निरास तेरो अब भयोंदास रूप सुधा की
 पिया विषया किमि पीजिये ॥४॥ काशी पुकार
 नाइ माथ जोरि हाथ करिके सनाथ मोहि
 भक्ति दान दीजिये ॥ ५ ॥ २८ ॥

उलटी हो दुनिया की रीति । उलटी हो ॥
 सिन्धु सुता पद भजहि न कबहू विषइन मांहि
 बढावहिं प्रीति । तन धन धाम सबहिं जो दीनी
 भूलहिं ताहि कवनि यह नीति । झूठे जगत मांहिं
 सब भूले राखहि नाहीं सत्य परतीति । मातु पिता
 कमला हरि पदते विमुख होइ वो बडी अनीति ।
 काशी भजु हरि प्यारी के पद बूथा करहु मति
 आयु वितीति ॥ २९ ॥

भजु मन सिन्धु सुता छबिरासी । जाहि
 अराधहि सुरपति धनपति वायु अनलयम पाशी ।
 सुरनर मुनि की कौन चलावे जेहि हरि शम्भु
 उपासी । जाहि सदा योगी हिय ध्यावै निरखहि दीप
 शिखासी । ताहि भजे समगति दोउ पावै गृह
 वासी सन्यासी शरण गये राखति जग जननी
 कोटि जनम अधनासी । जन अपराध कबहु नहि
 हेरति देति परमगति खासी । वध जौ सकल विश्व
 करिडारै कोटि जीव दै फांसी । भक्ति सहित श्रोपद
 भजि सोऊ पावै गति कैलासी । त्रिभुवन माहि
 अपर कोउ नाही मातु समुद्र सुतासी । कीट पतं-
 गहु काशी बनावति विष्णु शंभु अविनासी ॥३०॥

॥ गजल ॥

सागर सुता की प्रीति सदा दिल में ठा-
 निये । ब्रह्मादि देवकी जननी उसको मानिये । है
 आदि शक्ति सिन्धुसुता ब्रह्मरूपिणी । मन बुद्धि

ते परे उसे कैसे वखानिये । माया ने जिसके सृष्टि
रची यह सनातनी । मायेश्वरी स्वतन्त्र परा शक्ति
जानिये । स्वासा रतन अमोल तेरे हाथ में है आज ।
कौड़ी के मोल जाता है कुछ मनमें आनिये ।
काशी मे वसके भजिये समुंदर किशोरी को । तजि
ये विषे को यार मेरी बात मानिये ॥ ३१ ॥

सागर सुताको जी से भुलाना नहीं अच्छा ।
दुनिया में अपने दिल को लगाना नहीं अच्छा
॥१॥ सब कुछ दिया है सिंधु किशोरी ने जब तुम्हें ।
एहसान उसका दिल से मिटाना नहीं अच्छा ॥२॥
आजार दो किसी को न लज्जत के वास्ते । यारो
पराये दिल का दुखाना नहीं अच्छा ॥३॥ जब
भगवती ने दी हैं तुम्हे आंखे अकल की अंधो की
राह में तुम्हे जाना नहीं अच्छा ॥४॥ काशी
भजो समुद्र किशोरी को रात दिन । दौलत को
जिन्दगी के गवाना नहीं अच्छा ॥ ५ ॥ ३२ ॥

दुनिया में अपने दिल को भला क्या लगा-
इये । सुन्दर गुनानुवाद रमाजी के गाइये ॥ पैदा
किया है जिसने जहां में हमें तुम्हें । एहसान उस
का दिलसे न अपने मिटाइये ॥ बोझा है तेरे शिर
पै गुनाहों का बेसुमार । मुहत गुजर गई इसे कब
तक उठाइये । दिन रात उम्र तेरी गुजरती है दम
दम । बेयाद भगवती के न नाहक गवाइये ॥ जि-
सका मोकाम दिल के महल में है उसको यार । सारे
जहां में दूढ़ने से कैसे पाइये लीजो खबर जरूर हमा-
री हरि प्रिया । तेरा हुंदास मुझको न एतना भुला-
इये दर्शन के वास्ते यह तडपता है रात दिन ।
काशी को एक बार तो मुखड़ा दिखाइये ॥३३॥

मेरी हरि प्रिया कमला हम को अब मिलो ।
जाताहुं जान सेजी भला हम को अब मिलो ॥
जब से सुना शोर तुम्हारे जमालका सोजिश से
इश्क के मैं जला हमको अब मिलो ॥ ग़ममें तेरे

वेसालके मैदान हिजूमैं । मुहत्तमदीद तक मैं चला
 हमको अब मिलो । साबित कदम हूँ राह मुहब्बत
 में आप के ॥ हिस्सोहवासे मैं न हिला हमको
 अब मिलो । काशीकी आरजू है यही तुमसे मेरी
 जान । दिखलावो मुझको अपनी कला हमको
 अब मिलो ॥ ३४ ॥

कमला के मिलने की है बड़ी आरजू मुझे ।
 मुहत्त से है उसी कि सदा जुस्तजू मुझे मैं चाहता
 यही हूँ कि देखूं हरि प्रिया । भाती नहीं है और
 कोई गुफ्तगू मुझे ॥ कूचे में अपनेदीजो मुझे ज़रूर
 दौड़ावो सिन्धुजानहि अब कूबकू मुझे । करके कृपा
 दिखावो कदम अपने हमको अब । कीजैन मुंतशिर
 कमला सूबसू मुझे काशी तुम्हारा दास हूँ रखता हूँ
 तेरी आस । ममूनमिन्नतो का करो मूबमू मुझे ॥ ३५ ॥

अर्मान दिल में है कमला के मिलाप का ।
 जाता रहा है खौफ जुदाई के तापका ॥ मिलजाय

मुझको गर कमला ब्रह्म रूपिणी । परवा है का
लकी नहिं ग़म यमके बापका ॥ लाखो पतित तरे
हैं रमा के भजे हमेश ॥ कमला के सेवकों को नहि
डर है पापका ॥ मेरी गुनाहों पै न धरो ध्यान
सिन्धुजा । दिलमें करो विचार तुम अपने प्रताप
का ॥ मुझपर दया समुद्र किशोरी करो जरूर
काशी गुलाम बन्दा खरीदा है आपका ॥ ३६ ॥

लेहु मोरि सुधि सिन्धु किशोरी । बार बार
विनवो करजोरी ॥ अब विलंब रुबहु नहिं कीन्ही
जब सेवक जन तोहि निहोरी ॥ हमरि बेरि
काहे अलसानी । पाछिली वानी भई जनु
भोरी ॥ यह लालसा हिये अति वाढी । इन्ह
आखिन निरखो सुठि जोरी । सजल जलद दुति
हरि दाहिने दिशि । वाम रमा चपला छवि गोरी ॥
वेगि मिलहु मेरी हरि प्यारी । अब वियोग नहि
जात सहोरी ॥ काशी सब मुर त्यागि भजत तोहि

और खवरि लैहै मोरि कोरी ॥ ३७ ॥

कबलैहै सुधि मेरी हरि प्यारी । करि करुणा सुनि
 विनय हमारी ॥ नृपाति सुदर्शन समर मांहि जब ।
 अति आरत सुधि तोरि सुधारी । सुनत पुकार
 सिंह चढिधाई । धारि खड्गवैरी गन मारी ॥ महिषा-
 सुर दुख दिये विविध विधि । तब सुरगन तब
 शरण पुकारी ॥ दुर्गा रूप प्रगटि सुरजननी । ताहि
 असुर दल सहित संघारी ॥ कामक्रोध लोभ मद
 मत्सर । दंभ कपट तृष्णा दुख कारी ॥ ए बैरीगन
 मोहिं सतावत । पाहि प्रणत पालिनि हरि प्यारी ॥
 करत पुकार बहुत दिन बीते । केहि कारन मोहि
 मातु विसारी ॥ काशी सिन्धु सुता पद किंकर ।
 हरहुमातु मम संकठ भारी ॥ ३८ ॥

गजल ।

सागर सुता कौ भजिये जिसने जगत
 बनाया ब्रह्मादि देव माता कमला है योग माया ॥

योगी मुनी विरागी धन धाम पुत्र त्यागी । जग-
 दम्बभक्ति रागी देवी चरित्र गाया ॥ विधि ईश
 शेष हारे पंडित थके हैं सारे । मुनि गन हिये
 बिचारे नहिं अन्त उसका पाया । स्वासास्तन अजूबा
 किसमत से तुम ने पाया । जानी न कदरे इसकी
 नाहक बृथा गवाया । तुमने गरभ में यारों जगद
 म्बके भजनका । कौलो करार करके किसवास्ते
 भुलाया ॥ अब भी जो हो सके तो सागर सुता को
 भजले । खावेगा सुख से सोई जिस मर्द ने
 कमाया ॥ पापी अधम के कारन करुना निधान
 कमला । अपनी दयालुता को काशी में है
 दिखाया ॥ ३१ ॥

भजो सागर किशोरी को तुम्हे जिसने बनाई
 है । छिपा है ब्रह्म माया में प्रगट महिमा दिखाई
 है ॥ जिसे आत्म कहे ज्ञानी चरित नहिं वेद
 ने जानी परा शक्ती महारानी बही हरिकी लो-

गाई है ॥ लसै मुख चन्द्र की जोती भरी है मांग
में मोती । चकित मति वरनते होती महा छवि
को बढ़ाई है ॥ जिसे श्रुति नेति कहि थाकी थकित
मति ब्रह्म बनिता की । लखी छवि मातु कमला
की अजब मुख की निकाई है ॥ दयाकरि विश्वज-
ननि ने पतित पामर उधारन की । लखोनिर्वान
काशीमें रमाजी ने लुटाई है ॥ ४० ॥

चलु मन बेल विपिन सुखरासी । जहाँ वसति
जग तारिनि कमला हरि हिय धाम निवासी ॥
आदि शक्ति त्रिभुवन की माता विधि शिव
विष्णु उपासी ॥ जाहि भजे उत्तम गति पावहि
योगी जती उदासी ॥ निजदासन कह सोइ हरि
प्यारी सुखदा कल्पलतासी ॥ जन अपराध छमा
करि जननी जनम जनम अघनासी ॥ देति परम
गति मुनि जेहि जाचत काटि मोह भ्रम फासी ॥
हिय निज धाम समुद्र सुता को जह वसु दीप

सिखासी ॥ सोइ सेइये जँह पाइये कमला क्या
मथुरा क्या काशी ॥ ४१ ॥

विहरति फुलवरिया सिन्धु लली । एक हाथ
हरि कांधे धरि कै दूजे पिरावति कंज कली । फुल
निके भूषन अंग राजित सागे ललित सोहाति
भली ॥ चंपा वकुल रचित सुठि वेणी बिच बिच
लागी अनार कली ॥ निज कर रचि रचि कुसुम
विभूषन पहिराये है हरि भाँति भली । मृदु
मुसुकाति भौह करिवाँकी हरि की सुधिबुधि
आजु छली । काशी मान कमल निहारति
आवति सिन्धु किशोरी चली ॥ ४२ ॥

गजल ।

गरजानहूँ जुदाई में उसके तो क्या करूँ ।
कबतक फेरक सिन्धुसुता का सहकरूँ आतिशय
इश्क के मेरा सीना सुलग गया मिलनेकी इशित-
याक में कबतक जलताकरूँ । हूँ मैं मरीज इश्क समुन

दरकिशोरीका । इस मर्जे लादवाकी मैं क्योंकर दवा
करूं ॥ मुश्ताकहं विसालका उसके मैं इस कदर ।
गर वह मिलै तो जानको अपने फिदा करूं ॥ वादा
है जानिसारिका मुझको मिलै अंगर । काशी में
अपने वादे को मैं भी बफा करूं ॥ ४५ ॥

कमला की यह अदभुतरीति । योगी मुनिगन
तप करि हारे पतितन पर बहुखाति प्रीति । परम
दयालु रहति दासनपर सुमिरत हरति सकल
भवभीति । बाल युवा बिनु भजन विताये बृथा
आयुमति करहु वितीति । भजन बिना नहीं
उचित वितैवो पाय मनुज तनपरम पुनीति ।
काशी सेइ रमा पद पंकज बाजी लेहु आपनी
जीति ॥ ४६ ॥

भजन ।

नारायणी रमा हरि वनिता सिन्धु सुता को
ध्यान धरो । कमल विलोचनि हरि मनरोचनि

संकठमोचानि को सुमिरो । जलधि किशोरी हरी
 की जोरी तनगोरी सब खोरि हरो घनश्यामा
 पुरुषोत्तम वामा पूरन कामा भजन करो । सुरमुनि
 रंजनि खलदलभंजनि दानव गंजनि चरण परो ।
 बिनु हरि प्यारी सिन्धुकुमारी भजे न एको काज
 सरो । भगवति पद्मा गुन गन सद्मा मोतिन
 जाकौ मांग भरो । सो छवि दासी जग उर वासी
 काशीको सब ताप हरो ॥ ४५ ॥

जलधिलली छवि नयन वसीरी । दृग कंजन
 अंजन मनरंजन ललित अधर बिच मधुर हँसीरी ।
 चन्द्र सहोदरि चन्द्र वदन लखि होत मंद दुति
 शरद शशीरी । कुंडल श्रवन क्रीटशिराजित कटि
 कंचन किंकिनी कसीरी । वर अरु अभय युगल
 कर पंकज वेदी भाल विचित्र लसीरी रमारूप
 रविप्रात निहारत काशी हियनलिनी विकसीरी ॥

ललित वदन लखि जलधि लली के ।
 अब न आंखितर आवत कोई भये आजु पूरन

विधु फीके । निरखि मुकुन्द प्रिया दसनन को दांत
 कुन्द भये कुन्द कली के । बदन सरोज मांहि
 जुगलोचन मधुलोलुप जनु सुवन लली के ।
 मुक्ताहार नाभिसर के तट उपमा लहत हंस
 अबलीके पीनपयोधर रुचिर मनोहर मिटत ताप
 निरखे त्रिवली के । काशी भजि कमलापद
 पंकज नसहिं कलुष कलिकाल बली के ॥४७॥

कमला हरि प्यारी ले खबरिया मेरीरे । मोहि
 ले बचाय मेरी सिन्धु की लली मो कह कलिकाल
 कीन्ही बरजोरीरे । कैसे के बखानो तोहि हे हरि
 प्रिया महिमा अतुलित मति मोरी थोरीरे सजल
 जलद छबि विष्णु संगमें चपलाके समान क-
 मला सोहै गोरीरे । परम छबीली रमा को भज
 काशी जाको सुरपति हरिहर निहोरीरे ॥ ४८ ॥

कवन दिन कमला ऐहरी । मोरी सकल
 ढिठाइ छमि त्रिभुवन माई कब मेरो ढिग आई

सुधि मेरीलैहैरी । सुनि बैन सुखदाई कब श्रवन
 जुडाई देखि मुख की निकाई कब दृग सुख पै-
 हैरी । सुनि रूप की बड़ाई मोहि काहु न सो-
 ह्राई कब मोहि अपनाई निज दरस दिखैहैरी ।
 मेरी बीती लडिकाई गई वृथा तरुणाई अब
 आई है बुढाई कब मोहि अपने हैरी । तजि मन
 कुटिलाई सब सुर को विहाई भजि हरि की लो-
 गाई कब काशी बलि जैहैरी ॥ ४६ ॥

मेरो मन मोहि लई सिन्धु की किशोरी ।
 भूषन भूषित सुअंग लखि छवि लाजे अनंग
 सोहति घनश्याम संग दामिनि दुति गोरी ।
 सुन्दर कमला स्वरूप अमित कान्ति गुन अनूप
 बरनै सुनि ब्रह्मरूप आनंदमय जोरी । करुणानिधि
 शीलपुंज धीरकर जुगल पुंज निरखि मुखसरोज
 मंजु शशि लजि त्रिन तोरी । विमल चरित गुन
 उदार महिमा अतुलित अपार वेदहु पावै नपार

मोरी मति थोरी । नाशिनि दारुण क्लेश कोमल
चित जो हमेश उपमा पाये न शेष शारद भई
भोरी । शुभ गुन वररूप धाम शोभा छवि अतुलग्राम
सेवक नयनाभि राम मोहति वरजोरी । पूजिहि
मन आस सही मेरे अभिलाख यही काशी
हियधाम वसै कमला हरिजोरी ॥ ५० ॥

या जग कमला जीको राज । जामु अधीन
चराचर स्वामी तीनि लोक महाराज । विधि महेश
जाके पदवंदहिं सकल देव सिरताज ॥ कमला चरन
सरोज अराधहिं नितिधन पाति सुरराज । वरनाहि
जामु अलौकिक महिमा मुनि गन सहित स-
माज मनि मानिकको मोल बढ़ायो सस्तो कियो
अनाज विनुसेवा त्रिभुवन को पालति रमा ग-
रीब निवाज ॥ परिहरि आस अपर देवन की साजि
भक्ती को साज । काशी हरि प्यारी पद भजिये
त्यागि जगत के काज ॥ ५१ ॥

॥ झूलन ॥

झूलति भूमकि समुद्र किशोरी हरि संग
 परम सोहाई हो । नव सज साजि सिंगार
 मनोहर भूषन कुसुम बनाई हो ॥ झुकि झुकि
 युवति झुलावति झूला मुदित मधुर धुनि गाई
 हो । सजल जलद छाये नभ मंडल दामिनि
 दुति चमकाई हो ॥ बूंद फुहारभूमि त्रिन संकुल
 शोभा अधिक बढ़ाई हो । सुरतिय युथ्य झुलावन
 आई जनु सरिता वढि आई हो ॥ भवसागर को
 पार तरत मुनि जासुललित गुन गाई हो ।
 तामुरमा छवि निरखत काशी बार बार वलि
 जाई हो ॥ ५२ ॥

झूलत श्री बैकुंठ बिहारी सहित समुद्र
 कुमारी हो । सजल जलद जनु हरितन शोभा
 दामिनि छवि हरि प्यारी हो ॥ उमा सचि बानी
 पिक कोकिल हरषित सब मुर नारी हो । शिव

सनकादि बखानत महिमा दादुर रट श्रुतिचारी हो ॥
 नारदादि मुनिगन केकी जनु नाचहिं मेघ नि-
 हारी हो । घन घमंड छबि नभ सोहै बरषारि
 सुखकारी हो ॥ जासु रूप गुन अमित बखानत
 शारद की मतिहारी हो । काशी मुदित मुकुन्द
 पियाछबि निरखि जात बलिहारी हो ॥५३॥

देखो झूलति आज समुद्रसुता छहिया अति
 सीतल कुंजलता । विधि शम्भुनुतानिज भक्तहिता
 करुणा सहिता विपदा रहिता ॥ महिमा अमिता
 मधवा नमिता दुति देखि लजाहिं सदा सविता ।
 जगदीश प्रिया जगकी जननी हरिकी बनिता
 छबिकी सरिता ॥५७॥

कमला हरि झूलत प्रेमभरे श्रुतिकुंड लसी
 सकिरीट धरे । दोउ सोहत दिव्य सिंगार करे
 बिलसै बनमाल दुहून गरे ॥ चपला लपटी जनु
 वारिदसो उपमा यह सुन्दर जानि परे । काशी

निरखे छवि धंपतिके कलिकेशव पाप कलाप
हरे ॥५५॥

दारिद्रि हरनि मुदकरनि मालु जगदीश
प्रिया हरिबाला । ससिबालभाल लोचन विशाल,
गेर लसत जाहि मोतिनको माल, गति लखि
लजाहि करिवर मराल, बानी सुठि मृदुल रसाला ॥
जनको कलेश नाशति हमेश, निति भजहि
जाहि बिधि हरि महेश, पाये न अन्त चहुंवेद
शेष, माहिमा विचित्र सुविशाला । हरिये कराल
कलिकाल जाल । छमिये कुचाल ममजानि बाल,
करिये निहाल मोहि विष्णुबाल, कोमल चित दीन
दीन दयाला । काशी सहित तजि सकल
काज, बिनवाहि जोहि धनपति देवराज, निति
ध्यान करहिं जोहि मुनिसमाज, द्विजराज धरे
मृगछाला ॥५६॥

॥ इति कमला आरती सम्पूर्णः ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ कवित रत्नावली लिख्यते ।

सवैया ।

हरिकी वनिता पयसिन्धु सुता महिमा
अमिता करुणा सरिता ॥ जनकी प्रतिपालिनी
दानवघालिनि श्रीवनमालिनि देवहिता ॥ पय
सागर नन्दनि पाप निकंदन मुनिवर नन्दनि
देवहिता ॥ काशी हिय धाम बसो बसुयाम निर-
न्तर, हे जन कल्पलता ।

वेद पुरान बखानत जाहि प्रभाव अनन्त
अनंत न जाने ॥ देव प्रजेश रमेश महेश सुरेशहु
जासु अराधन ठाने ॥ ताहि विहाय सहाय न
और विचार भजे हिय मांहि सयाने ॥ काशि
सोई जगमातु रमा पयसिन्धु सुता कर मांहि
बिकाने ॥२॥

राखि जटा करि सिद्ध छटा कोउ अंग वि-
भूति रमावत कोउ ॥ ऊरध पुंड लगाय लिलार
अचारहि धारि अचारज होऊ ॥ वस्त्र कषाय रंगाय
कोऊ हमरे मनमांहि सोहाय न सोऊ ॥ काशी
सदा कमला पद किंकर लेवे को एक न देवेको
दोऊ ॥३॥

कलिकाल करात विहात कियो मुनिज्ञान
विशारद जांहि ठगाई ॥ धर्मको लेश नही जगमें
मद कामकला अति से अधिकाई ॥ यमदूत
जबै यमराजपुरी गाहि लेइ चलै न लहै चतुराई ।
काशी तहँ केवल छीर समुद्र सुता बिनु और
न होय सहाई ॥४॥

जप योग समाधि क्रिया व्रत संजम होय
नहीं कलिकाल बली है ॥ कामिनि तासु सहाय
बड़ी मुनि जोगिहि जौनि बलात छली है ॥
याहि अवसर त्यागि सबै जगको जगदंब भजो

तो उपाय भली है ॥ काशी भवसिन्धु उतारनको
समस्त अकेलि समुद्र लली है ॥५॥

दुख संकठ नाश करै नहिं और तपोतप
तीरथ मांहि अटै ॥ शशि सोदरि मातु बिना
भजि और कहूं नहिं काहूको ताप मिटै ॥ भव
बंधन जीव बंधाई गयो जगदंब कृपा बिनु नाहिं
छुटै ॥ काशी हियमांहि विचारि सदा पय सिन्धु
सुता शुभ नाम रै ॥६॥

महिषा सुरपाय भहा बरदान गह्यो अभिमान
जहानहिं जानो ॥ जीतिलई अमरावति को
सो कथा जगख्यात कहालों बखानो ॥ बैर किये
जगदीश्वरिते नहिं देर लगी छनमांहि विलानो
काशी जगकी यह रीति सदा जो फरो सो भरो
जो बरो सो बुतानो ॥७॥

बिन्दु बिहीनहु बानीको बीज जपे द्विज धीर
महा सिधि पाई ॥ ताहि बखानि सकै कबि कौन

जो नाम रमा की सदा रटलाई ॥ सुमिरे जेहि
पातक कोटि नशाब सकै कहिको कमला प्रभु-
ताई ॥ काशी लखो जननी की दया जँह कीट
पतंगहु शंभु बनाई ॥८॥

ताकी पराय दरिद्र सबै हिय धारिदया
कमला जेहि ताकी ॥ कोटिन काम निहारि
लजैं दुरिजाय अकास प्रभास-बिताकी ॥ शंभु
सदाहिय ध्यान करैं सबके उर जोति प्रकाशित
जाकी ॥ काशी सोई अब सिन्धु तगे जेहि प्रीति
सदा पय सिंधुसुताकी ॥९॥

निशि वासर भोग करै विषया कबहुं नहिं
ताहि सौ पेट भैरै ॥ नहिं छूटत है भव बंधन
ते केतनोइ उपाय अनेक करै ॥ विनुदेवि कृपा
नहिं छूटि सकै भव जाल विशाल बंधाइ मरै ।
काशी प्रनरोपि कहै सुत को जग मातु विना
दुख कौन हरै ॥१०॥

विषया लयटाइ रह्यो जगमें कमला पद
 प्रीति न चित्त धरै ॥ यहि कारन मुक्ति लहै
 नहिं जीव सदा भव बंधन माहिं परै ॥ बिनु
 सिन्धु सुता पद प्रीति गहे कबहुं भव सागर
 नाहिं तरै ॥ काशी प्रनरोपि कहै सुतको जग
 मातु विना दुख कौन हरै ॥११॥

जगदंब बिलंबहि त्यागि अबै चितवो निज
 दासहि नैन के कोरे ॥ विधि ईश सदा जेहि
 सीस नवावत ताहि वखानि सकै कबि कोरे ॥
 ताहि भजे सुख होय मद्दा हम सत्य कहैं लिखि
 कागद कोरे ॥ काशी सोई भव सिन्धु तरै कमला
 पद प्रीति सदा जिन कोरे ॥१२॥

जासु कटाक्ष बिलोकत लोकप देव मुनि
 सहिपालति जेरे ॥ जाहि सदा हिय ध्यान करै
 विधि माधव ईश उभय करजेरे ॥ मातु कृपा
 निधि सागरनन्दनि विष्णु प्रिया पद कंज

भजोरे ॥ काशी पुकारि कहै सब सों विषया
विषरूपहि वेगि तजोरे ॥१३॥

निगमागम शास्त्र पुरान सबै मुनि ज्ञान बि-
शारद व्यास कहे ॥ माया वश जीव भुलाय रह्यो
निज आत्म को भवताप सहे ॥ जन शोक
निवारिनि मातु रमा पय सिन्धु सुताहि विसारि
रहे ॥ काशी तै मंदगवार महा कबहुं निरखानहिं
नाहिं लहे ॥१४॥

वेद पुरान बखानत जो सबही अवलोकि
इहै मतिधारी ॥ त्यागि सबै व्यवहार सदा गहि
भक्ति अनन्य भजो हरि प्यारी ॥ जे नर मूढ
भजै नहिं देवि सैं दुख दारुण तेई अनारी ॥
काशी सोई भव सिन्धु तरे जेहि सिन्धु सुता
गहि पार उतारी ॥१५॥

भजु मातु दयानिधि सिंधु सुता निति धारि
हिये अति प्रीति घनेरी ॥ शंभु रमेश दरिद्र

महा जबही तिनते कमला मुख फेरी ॥ सोई
रमा हिय धारि दया छमिहैं सब चूकि कृपा
करि तेरी ॥ काशी कहँ एक रमा को भरोस
सहाय सोई करिहै तजि देरी ॥१६॥

काहू की मोहि नहीं परवाहि सहाय जबै
जग मात है मोरे ॥ जो कमला हरि की
बनिता करुणा सरिता न कहूं मुख मोरे ॥ जाहि
विंशति महेश गणेश सुरेश सब बिनवैं करजोरे ।
काशी पुकारि कहै जगमें कमला जब राखिहै
मारिहै कोरे ॥१७॥

लखि सिन्धु सुता छवि की सरिता नि-
मिषै दृग अंचल त्यागि दई ॥ भुज चारि बि-
भातस नाल सरोज उभय कर में युग कंजु-
लई ॥ कर पंकज दोय अभय बरदायक नैन
चितौनि की रीति नई ॥ काशी हिय धाम बसो
बसुजाम रमा जय पालिनि मोद मई ॥१८॥

गोल कपोल विराजित लोल अमोल
 सुकुंडल मेलनकी ॥ छवि वरनिन जात विभाति
 प्रभा अति मोतिन माल अमोलन की ॥ शशि
 सोदरि रूप अनूप लसै छवि चित्र रमा दृग
 खोलन की ॥ काशी सदा बलि जात समुद्र सुता
 कमला जी के वोलनकी ॥१९॥

शतवर्ष को आयु प्रमाण किये निशि
 सोवत ताहूमें अर्ध विताये ॥ बाल जरा महँ
 आधी गई पुनि अर्धहु रोग वियोगहि छाये ॥
 शेष विताय दई जगमें नृप सेवत कष्ट अनेक
 उठाये ॥ काशी बिचार करै मन मैलाहि मानुष
 जन्म कहा सुख पाये ॥२०॥

जौलों है स्वस्थ शरीर अरोग असीन ही
 जब लागि तोहि बुढाई ॥ जौलों अशक्त भई
 नाहि देहहु जब लग क्षीण भई नहि आई ॥
 तौ लागि काशी उयाय यही भजिये सुख हेतु रमा

जग माई ॥ जंब घर आगि लगी धुधुवाय न
कूप खोदाय न जाइ बुताई ॥२१॥

स्वारथ लागि रहे तेरे साथ नहीं परमारथ
मांहि सहाई ॥ जीव अकेल पयान करै गृह
संपति साल दुशाल बिहाई ॥ संग कुटुम्ब
सखा पितु मातु सुता सुत बंधु कलत्र नचाई ॥
काशी तजो जग को वेवहार भजो हरि प्यारी
रमा गुनगाई ॥२२॥

जो जगमें तव मित्र लखाय बिचार किये
सबही रिपु तेरो ॥ एक समुद्र किशोरी बिना
हित नाहि लखाय चराचर हेरो ॥ स्वारथ
लागि कुटुम्ब सबै करि झूठो सनेह सदा तोहि
घेरो ॥ काशी प्रसाद बिहाइ सबै भजु हरि बनिता
अबही तो सबेरो ॥२३॥

जौलो समर्थ रहो तन मै करि कोटि कुकर्महि
द्रव्य कमायो ॥ मन माहि रही मन की

सब ही जब वृद्ध भयो कोउ काम न आयो ॥
गात गयो सिथिलाइ महा सुत बंधुनते सुख
रंच न पायो ॥ काशी अजौ नहि प्रीति करी
कमला पद जो तोहि पोसि जियायो ॥२४॥

गात अशक्त भई गति अष्ट न सूझत आं-
खिन न कान सुनाई ॥ दांत कि पांतिनही मुख
में बहुलार बहै कफकी अधिकाई ॥ कष्ट जरा-
पन को न कहाय जहा सुतहू न करै सेवकाई ॥
काशी विचारि विलम्ब तजो जगदम्ब भजो न
तो आई बुढ़ाई ॥२५॥

कांपत अंग नहीं कोउ संग भई गति मंद
ननै न सुभाई ॥ आरत सबहि पुकारि रहै न सुनै
कोउ बंधु कुटुम्ब लोगाई ॥ आदर तासु न कोउ
करै यहि भांति ग्रसै जेहि आइ बुढ़ाई ॥ काशी
सहाय न ताहि समय कमला जगपालिनि मातु
बिहाई ॥२६॥

मान सरोवर तीर मराल महाजलते मुकुता
जिमि काढ़े ॥ भव जल बूड़त जीवन को जग-
दम्ब उवारि लई भय वाढ़े ॥ करजेरि महेश धनेश
निहारहि जामु कटाक्ष निरन्तर ठाढ़े ॥ काशी
कहै एक सहाय सोई पय सिंधुसुता कमला दिन
गाढ़े ॥२७॥

शक्ति चरित्र करो निति गान सुनो नहि
आन कथा मनलाई ॥ केवल शक्ति को ध्यान
धरो निशि वासर शक्ति की भक्ति दिढ़ाई ॥ और
सो मोहि नही कह्यु कामरमापय सिंधु किशोरी
विहाई ॥ काशीप्रसाद की टेक यही भजिये
कमला सब ही विसराई ॥२८॥

तजिकै ममता भजुहरि वनिता मुनि भक्त
हिता जेहि गावतु हैं ॥ पयसिन्धु सुता महिमा
अमिता विधि हर सविता जेहि ध्यावतु हैं ॥
सोई ब्रह्म प्रिया प्रकृती अजया सबही निज हाथ

नचा वतु है ॥ माया वश देव मुनिन्द्र सबै सोइ
होइ दयालु छोड़ावतु हैं ॥२९॥

चहुवेद पुरान ऋषी सबही जगतारिनि को
गुन गावतु है ॥ विधि हरिहर बल जगमातुहि
के सिरिजत पालत विनशावतु है ॥ जगदम्ब
समान दयालु कोऊ त्रिभुवन महँ दृष्टि न आवतु
है ॥ काशी नरकीट पतंग सबै निखान समानहि
पावतु है ॥ ३०॥

दस महाविद्या के दस कवित्त ।

काली ॥ १ ॥

मातु दयानिधि जाहि भजै विधि धारि दया
सुर मुनि प्रतिपाली ॥ शव शिव हृदय विराजति
हरखित शेवहि कोटिन योगिनी आली ॥
पालन हेतु सोई जन पालिनि दानव वृन्द
अनेकन घाली ॥ काहेविलख करो जगदीश्वरि
मोपर कृपा करहु अब काली ॥३१॥

तारा ॥ २ ॥

जासु प्रतच्छ चरित्र विचित्र महत्व पवित्रसु
कीर्ति उदार ॥ जापदधरि दिरंचि वटोरि बनावत
अविकल श्रृष्टि अपारा ॥ जानि प्रताप अलौ-
किक ढोवत शेष सदा शिर पे महि भार ॥
काहे न धारि दया प्रति पालहु सेवक ह जन-
तारिणि तारा ॥३२॥

॥ षोडशी ॥ ३ ॥

जासु प्रताप अनन्त बखानत शेष महेश
गनेशहु लाजै ॥ प्रात समै सविता की प्रभा
जिमि तेसोइ श्रीललिता छवि छाजै ॥ करं
पंकज शायक चाँप लिये जुगहस्त अभय बरदान
विराजै ॥ सो त्रिपुरा जगदंब पराभव ताप हर
निति मोहिनि बाजै ॥ ३३ ॥

सुवनेश्वरी ॥ ४ ॥

सुनि श्रवन सुजस शरणागत को निति

सेवक पालिनि तोहि पुकारें ॥ तोहि विहाय सहाय
न माय कोऊ भुवि मंडल मांहि हमारे ॥ बूडत
हैं भवसागर मांहि कृपा करिकै अब वेगि उवारे ॥
काहे विलंब करो भुवनेश्वरि केवल मोहि भरोस
तेहारे ॥ ३४ ॥

भैरवी ॥ ५ ॥

भैरवि भैरव संग सदा विहरै कर पात्र कपाल
लिये ॥ भरि आनंद दंपति नृत्य करै शमशान
सदा मद पान किये ॥ निज सेवक के भय नाश
करै जन साधक को सब सिद्धि दिये ॥ सो जननी
भव भीति हरै करुणारसको निति धारि हिये ॥ ३५ ॥

छिन्ना ॥ ६ ॥

मातु दयानिधि छिन्न शिरावन मै लखि
प्यासी सखी अति प्यारी ॥ निज हाथ सो काटि
कै आपनो माथ सुधारस धार गरे ते निकारी ॥
एक लई अपने मुख में जुग डाकिनी वर्निनीके

मुख डारी ॥ त्रैसी दयालु न और कोई जैसि छिन्न
शिरा गिरिजकुमारी ॥ ३६ ॥

धूमावती ॥ ७ ॥

काक पताक धुजा फहरात मनोहर गातव
खानि न जाई ॥ धूम गिरिंद समान विभाति
प्रभा सरसाति महाछविछाई ॥ मणि भूषन अंग
सजे रथ मै जुग काक लगाइ के हाँकि चलाई ॥
धूमावती जेहि ध्यावैं जती मेरो दुःख दरिद्र हरै
जग माई ॥ ३७ ॥

बंगला ॥ ८ ॥

पट पीत मनोहर अंग लसै बिलसे मणि
भूषण पीत सबै ॥ पुनि पीतही माल सोहाय गरे
अनुलेपन पीतही अंग फबै ॥ रिपु कंठाहि कुंठित
वेगि करै जन सेवक ताहि पुकारै जबै ॥ बंगला
हिय धारि दया सोइ मानु हरै सब संकट मोर
अबै ॥ ३८ ॥

मातंगी ॥ ६ ॥

विषयारस त्यागि मतंग सुता पदकंज भजो
जाके हाथ सरंगी ॥ महिमा निज गान करै
निशिवासर नैन निहारी अजाहि सरंगी ॥
जग मै जगदंब बिहाय कोई नहि पुत्र कलत्र
अहैं तेरे संगी ॥ मन मत्त मतंग को सूधो करै सोइ
मालु मतंग कुमारी मतंगी ॥ ३६ ॥

कमला ॥ १० ॥

जासु महेश सुरेश धनेश गणेश हमेश अरा-
धन ठानी ॥ नाम लिये अधपुंज नशैवर मुक्ति
लहै जेहि जाचत ज्ञानी ॥ ध्यान करै हिय जोगि
सदा महिमा वरनै श्रुति जासु बखानी ॥ अंब सोई
अवलंब हमे प्रतिपालति जो कमला महरानी ॥ ४० ॥

घनाढ्यरी ॥

कमला महरानी परब्रह्म पटरानी सुर मुनि
विज्ञानी गति पावै गुन गाइकै ॥ अमित प्रभाव

जासु सकत बखानि नाहि शारद गनेश शेष रहत
 लजाइकै ॥ अवलों कहू विलंब कीनी जगदंब
 नाहि सेवकहि पालि सुनि ढेर बेगि धाइकै ॥
 काशी पुकार करैं देर भई मातु अब असही
 चितैहो की चितैहो चित लाइकै ॥ ४१ ॥

मधुकैटभ नाश हेतु विधि की पुकार सुनि
 प्रगटितुस्त राखी विधिहि बचाइकै ॥ असुर हयारि
 शुभ रक्त बीज चंड मुंड सुरहित लागि वधी समर
 मचाइकै ॥ जब निज दासन पै भीरि परी मातु
 तुस्त किये निशोच विविध उपाइकै ॥ काशी
 पुकार करैं देर भई मातु अब असही चितैहो की
 चितैहो चितै लाइकै ॥ ४२ ॥

कीधों सिथिलाई मानो आइ बुढाई तोहि
 कीधों रही वानि वह पाछिली भुलाई के ॥
 कीधों कलिपापिन असंख्य तोहि घेरी राखी
 अधम उधारनि भीरि रही अरुभाइकै ॥ कीधों

डरानी मम पातक समूह देखि किधों रही आपनो
प्रताप बिसराइकै ॥ काशी पुकार करै देर भई मातु
अब असही बितैहो की चितैहो चितलाइकै ॥ ४३ ॥

नृपति सुदर्शन कहँ घेरी रिपुसैन जब पहुची
सहाय हेतु सिंह चढि धाइकै ॥ तासु रिपुदल
विनाशि दीनी अखंड राजसेवक प्रति पाली जग
सुजश बढ़ाइकै ॥ मेरी बेरि काहे अलसानी कमला
भवानी कारन कवन जासे रही बिरमाइकै ॥ काशी
पुकार करै देर भई मातु अब असही बितैहो की
चितैहो चितलाइकै ॥ ४४ ॥

जासु ओर चितै मंद होति रवि ज्योति प्रात
लजै खंजरीट लखि लोचन विशाल है ॥ हीन शुक
तुंड छवि नासिका निरखि जासु करि बरल जाँहि
अवलोकि वह चाल है ॥ साँभको चकोर मुख
चन्द देखि पावै मोद विकसै निहारि अरविन्द
प्रातकाल है ॥ माधव दुलारी सोइ जलाधि कुमारी
मातु कर निति करति निज सेवक निहाल है ॥ ४५ ॥

जलधि कुमारी अघ नाशकी करनि हारी
जग हितकारी तोहि भयते उवारिहै ॥ अगम
अपार भवसागर ते बेगि तोहि माधव दुलारी
गहि पारही उतारिहै ॥ सोई हरि प्यारी क्षीर सागर
कुमारी जाहि सेउ त्रिपुरारी सब दुस्ति निवारिहै ॥
काशी परतीति मन माहि गहि ताहि भजु राखैं
जग जननी तब कौन तोहि मारिहै ॥ ४६ ॥

जासु नाम लेत दुख दारिद बिनाश होत
सुमिरि प्रताप कंपमान कलिकाल है ॥ जुग
कर पंकज जुगल कर बरा भीति केशर की खोरि
वर सोहै जासु भालहै ॥ दीन छवि हीन शशि
होत मुख जासु देखि लखि गति मंद बहु लजत
मरालहै ॥ धारिहिय करुणा विशाल निज दाशन
पै आजु अनुकूल जगमूल हरिबाल है ॥ ४७ ॥

जलधि कुमारी छवि जाउँ बलिहारी संग
सोहत मुरारी तन ललित दुकूलहै ॥ वर अरु

अभय विराजत जुगल कर अपर लसत जुग पंकज
को फूल है ॥ त्यागि नंदन विलास आनंद वन
करि निवास पामरहु देति मुक्ति दाहि अघतूल है ॥
जाग्रत सुषुप्ति स्वप्न त्रिगुन त्रिशूल मानो काशी
तुरीय परा शक्ति जगमूल है ॥ ४८ ॥

त्यागि जग जननी सरोज पद विषय माहि
कैर अनुराग वर तासु वडिभूल है ॥ नाम लेत
जासु मुक्ति पावत अधम खल जासु पद ध्यान धरे
नाशै भवशूल है ॥ जौनि गति योगी निति जांचै
बहुयोग साधि सोई मातु देति करि पापनिरमूल है ॥
परा शक्ति देति मुक्ति जीवाहि समान निति काशी
तुरीय जहँ त्रिगुन त्रिशूल है ॥ ४९ ॥

देखि मुख चन्द आनन्द छवि कंद कब सकल
कलिकलुष कलाप ताप टारिहौ ॥ कवधौ विलोकि
कमनीय रमा रमन संग रमा रमनीय तन सुधिहि
विसारिहौ ॥ कब हरिवामा छविधामा पद कंजु

मंजु हरि पद सरोज संग निजकर पखारिहौ ॥
 कौने दिन कृपा सिन्धु करुणा निधान दोऊ कमला
 रमेश निज नैनन निहारिहौ ॥ ५० ॥

सागर कुमारी भव भीतिकी हरनि हारी
 बिनती हमारी हरिप्यारी सुनि लीजिये ॥ तेरे
 विनु माय नहि अपर सहाय मोहि होइ कै कृपाल
 अव निहाल मोहि कीजिये ॥ त्यागि तव भक्ति
 सुधा दाश तेरो कहाय विषय विषरूप माय कैसे कै
 पीजिये ॥ काशी पुकार सुनि दरश दिखाय आय
 मोहि अपनाय माय भक्ति दान दीजिये ॥ ५१ ॥

सवैया ।

सोई प्रवीन वडो बुधि मान सुपंडित ज्ञान विशा-
 रद सोई ॥ त्यागि सबै विषया विषरूप भैं कमला
 पद पंकज जोई । शक्ति प्रताप प्रतक्ष सदा सब
 जानु जहान नही करु गोई । एक समुद्र किशोरी
 विना परमार्थ आवत काम न कोई ॥ ५२ ॥

कुंडलिया ॥

मेरी विनती सुनि अब जलधि मुता जगमाय ।
 केहि कारण मम सुधि अहो जननी रही भुलाय ।
 जननी रही भुलाय निपट वालाहि विसराई ।
 कोमल हृदय कठोर भयो किमि जानि न जाई ।
 काशी सबाहि विसारि गही शरणागत तेरी । तुम
 विनु सिन्धुकिशोरि और सुनि है को मेरी ॥५३॥

तव बिलंब कीनी नही जब विधि टेरे तोहि ।
 मधुकैटभ भै त्रसित अति बड अचरज हिय मोहि ।
 बड अचरज हिय मोहि तबहु नहि देर लगाई ॥
 महिषासुर वध हेतु सुरन जब तोहि मनाई ॥ शुंभ
 निशुभादिक असुर दुखित किये सुर मुनिहि जब ।
 टेरे सुनत आरत हरी तुरित प्रगटि जगदंब तव ॥५४॥

संवैया ॥

शिर मानिक क्रीठ लसै अति सुन्दर कुंडल
 की भलकानि भली । अलकानि कपोलानि पै

घुघुरारि मुदंत कि पंगति कुन्दकली । सुधिजाय
 भुलाय विलोकि छटा तिहु ताप नशाय लखे
 त्रिवली । जुग कंज अभै वर राजित हाथ विराजति
 छीर समुद्र लली ॥ ५५ ॥

विधि की उपासी ध्यावैं शंभु अविनासी
 जौनि जगत प्रकासी सोइ कमला छवि रासी है ॥
 विद्युत छटासी घनश्याम उखासी, जोहि सेवै नित
 पासी भक्त सुर तरु लतासी है ॥ जोगी औ
 उदासी चित की कलासी लखैं सेवक अधनासी
 भुक्ति मुक्ति देति खासी है ॥ मातु इंदिरासी तिहु
 लोक माँहि और नाहि माया जासु दासी ताहि
 सुमिरै जन कासी है ॥ ५६ ॥

कुंडलिया ।

सब अपराधहि मै करेउ हे जग तारिनि अंब ।
 तीरथ फिरि जानेउ नहीं जग व्यापिनि जगदंब ।
 वानी पराभवानि तासु अस्तुति बहुगायो । मन बु-

धिते जो पराताहि निज हिय मैं ध्यायों । अजाजनम
बहु मानि शरण तेरे आयो अब । छमा करहु
गहि दया मातु मेरे पातक सब ॥ ५७ ॥

सदन करुना के कंज शोभा सरिता के जाहि
एक वार ताके धन्य ताके पिता के हैं । इन्द्र ब्रह्मा
के वर विभव कटाछ जाके वरनै छवि वाके अस
बुद्धि बल काके हैं ॥ जैसे स्मा के है विलोचन
दरिद्र मोचन जैसे न उमा के न सचीन शारदा
के हैं ॥ काम मद छाके धाम ब्रह्म के कलाके
ग्राम अमित दया के नैन वाके कमलाके हैं ॥ ५८ ॥

कीधों यह धाम अभिराम मुक्ति कामदू को
कीधों फल ललित ए विद्रुम लताके हैं ॥ कीधों
कामधेनु भक्त कामना को पूरे निति कीधों
कंजु मंजु लावण्य सरिता के हैं ॥ कीधों अमल
दल जुगल कमल के ए कीधों द्वै मुकुर प्रभात
सविता के हैं ॥ पावन सुरेश शमन भावन पुनीति
किधों चरन सोहावन रमेश बनिता के हैं ॥ ५९ ॥

पावस की कवित्त ।

चढ़ि के अटा पै छटा देखि के घटा की
 आजु हिये अकुलात विरह सागर ललाम की ।
 लखिकै व कालिका कपालीहू के सुने बैन
 आवै नहि चैन सुधि तनकी न धाम की ॥
 पाई वरसात हिय ताहि सरसात प्रेम आठो
 जाम रहै याद शोभा हरियाम की । चपला
 विलोकि सुधि होति दुति कमलाकी देखि घन
 श्याम सुधि आवै घनश्याम की ॥ ६० ॥

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीहरिवल्लभायै नमः ।

अथ शक्ति भक्ति तरंगिनी लिख्यते ।

दोहा ।

वन्दौ मंगल दाइनी मंगल मूर्ति माय ।
 मंगल हित श्री मंगला कमला होहु सहाय ॥१॥
 ध्यावहि जासु सरोज पद शेष महेश गनेश ।
 अनल अनिल देवेश रवि शशि विधिधनद हमेश ॥
 विधि हरि हर जानै नही जासु प्रभाव अनन्त ।
 ब्रह्म बखानहि जाहि मुनि महिमा वरै संत ॥३॥
 जाकी मायाते रचित प्रगट आखिल संसार ।
 आत्मरूपिणी निर्गुणा तासु सकल विस्तार ॥४॥
 जासु शक्तिलाहि सुर असुर शक्तिमान सब होई ।
 तासो हीन अशक्त जग काज सरै नहि कोई ॥५॥
 सोई निगुना शक्ति पुनि त्रिगुन धारि पश्चात ।
 रचति सकल ब्रह्मांड को जो जग प्रगटलखात ॥६॥

(१४७)

सृष्टि शक्तिलाहि जासु विधि विरचत सकल जहान।
 पालन शक्तिहि पाइ हरि पालत जगत महान ॥७॥
 नाश शक्तिलाहि तासु पुनि रुद्र विनासत सोइ ।
 प्रलय काल या विश्वको सकल प्रगट नहिगोइ ॥८॥
 धारन शक्ति महील ही दाहक शक्ति हुतास ।
 वायु प्रेरना शक्ति कहँ दिनमणि शक्ति प्रकास ॥९॥
 विदित चन्द्रमधि चन्द्रिका तारा नखत उदोति ।
 शक्ति जोति सब जोति मधिहिय प्रतीति असहोति ॥
 या प्रकार संसार सब जहँ लगि जीव जहान ।
 आदिशक्ति व्यापित जगत अपर वस्तु नहि आन ॥
 बन्ध मुक्ति कारन परा शक्तिहि निश्चय जान ।
 शक्ति तत्व सूक्ष्म महा जानाहि संत महान ॥१०॥
 भक्ति ज्ञान बैराग जे मुक्ति हेतु विख्यात ।
 ते सब शक्तिहि जानिये प्रगट सरूप लखात ॥११॥
 सात पुरी जे मुक्तिदा काशी आदि लखाँहि ।
 शक्तिरूप संदेह नहि मुक्ति हेतु जग माँहि ॥१२॥

गंगादिक सरिता अखिल तुलसी मुक्ति निकतु ।
 शक्तिरूप सब जानिये अधम उधारन हेतु ॥१५॥
 गायत्री उपदेश लहि द्विजगन पावहि मुक्ति ।
 शक्तिहि कारन मुक्ति को अपर न कोई युक्ति ॥१६॥
 विना दक्षिणा शक्ति के यज्ञ नहीं फल हेतु ।
 शक्तिनाम केवल विदित भव सागर को सेतु ॥१७॥
 नहीं नारि नहि पुरुषहै आदि शक्ति गुनहीन ।
 नहीं नपुंसक कहि सकैहि कहूँ ताहि प्रवीन ॥१८॥
 एक अचल अद्वैतहै अकथ अरूप अनूप ।
 है सोई नारि पुरुष धारै विविध सरूप ॥१९॥
 मन बानी बुधिते परे कैसे वरनौ ताहि ।
 शक्तितत्व वरनन करत बुधिमाति अतिथकिजाँहि ॥
 मुक्तिलहे संसार मैं, जेजन जेजे भाव ।
 निश्चै मन अनुमानिये, केवल शक्ति प्रभाव ॥२०॥
 जाहि अराधहि मुक्ति हित, चतुरानन ईशान ।
 आदि शक्ति पद होहि लय, पावहि पद निर्वाण २२

(१४६)

परिहरि तासु सरोजपद, सुखद मुक्ति दातार ।
 भजहिं त्यागि ते कलपतरु, सेवहि मनहु मदार ॥२३॥
 पंचाशत जे वरण हैं, सकल शास्त्र के मूल ।
 महासुर सती रूपते, शक्ति तत्व अनुकूल ॥२४॥
 राचित अविद्या रूप जो, अखिल प्रपंच लखात ।
 मिले ब्रह्म विद्या सकल, मोह जाल मिटिजात ॥२५॥
 करे विविध विधि जतन के, मोह नाश नहिहोइ ।
 मायेश्वरिपद भाक्ति ते, सहज बिनाशै सोइ ॥२६॥
 सकल अविद्या नाशिनी, विद्याअजा अरूप ।
 जोगी हिय ध्यावैं सदा जासु, सरूप अनूपा ॥२७॥
 आत्मरूप संसार मैं, घटघट व्यापी अम्ब ।
 सब जड चेतन माँहिजो, आदि जोति जगदम्ब ॥२८॥
 श्रीविहीन निःश्रीकजगशक्ति विहीन अशक्त ।
 निगुनशक्ति सहित सदा निर्गुनब्रह्म अव्यक्त ॥२९॥
 अति रहस्य यह तत्वहै निगम, अगम को सार ।
 अरथ मर्म श्रीनामको, वरनौ करहु विचार ॥३०॥

सुख जो ब्रह्मानन्द को, सो हरि रूप शकार ।
 आदि जेति जो शक्तिहै, सो दीरघ ईकार ॥३१॥
 कालानल को बीज, सोई जानु रकार ।
 ब्रह्म शक्ति ते काल वश, प्रगट होत संसार ॥३२॥
 ब्रह्म शक्तिमें नाम यह, जगदंवा को जानु ।
 हरि प्यारीको नाम श्रीअरथ सहितहिय आनु ॥३३॥
 ब्रह्मरूपिनी शक्ति जो, मुख्य तासु श्री नाम ।
 नारि पुरुष द्वैभेदलहि सो, पायो परिनाम ॥३४॥
 नारि महा लक्ष्मी भई, पुरुष रूप पुनि आपु ।
 नारायण शिवरूप जो, विश्वविदित परतापु ॥३५॥
 ब्रह्मरूपिनी शक्ति जो, एका अजा अरूप ।
 उभैरूप धारि सगुन, लीला हेतु अनूप ॥३६॥
 भिन्न भिन्नगुन भेदलहि, ब्रह्म विष्णु ईशान ।
 वानी लछिमी गिरि सुतातासु अंश पहिचान ॥३७॥
 आदि शक्ति धारी बहुरि, दशविद्या को रूप ।
 नानारूप प्रगट करी, लीला हेतु अनूप ॥३८॥

कमला काली षोडशी, तारा भुवना नाम ।
 मातंगी वगला तथा, धूमावति अभिराम ॥३१॥
 छिन्न मस्तका भैरवी, दशधा शक्ति स्वरूप ।
 सोई लीला हेतु पुनि धारी निज पति रूप ॥४०॥
 श्रीकमला को पति विदित, नारायण भगवान ।
 काली को पति जानिये, महा काल परमान ॥४१॥
 मातु षोडशी को प्रगट पति, ललितेश्वर नाम ।
 ताराको अक्षोभ्य पति, जानहु अति वलधाम ॥४२॥
 भुवनेश्वरि को पति, लखो भुवनेश्वर सर्वेश ।
 मातंगी के पति सदा शिव, मतंग गिरिजेश ॥४३॥
 वगला मुखी भवानि के, पति मृत्युंजै रूप ।
 धूमावति पति जानिये, भैरव काल स्वरूप ॥४४॥
 छिन्न मस्तका मातुके, पति विकराल कजानु ।
 मातु भैरवी पति सदा, वडकेश्वर पहिचानु ॥४५॥
 दशहु शक्ति दश शिव सहित, भुक्तिमुक्ति करहेतु
 शक्तिभक्ति शिवके सहित, भव वारिध करसेतु ४६

जाविद्या को जौन शिव, लिखो ताहि तिहिसंग ।
 सदा ध्यान पूजन उचित, जानि शक्ति को अंग ४७
 दशौ महाविद्या बहुरि, लीला हेतु उदार ।
 दश धारेउ संसार मै पुरुष रूप अवतार ॥ ४८ ॥
 कमला को अवतार हैं, श्री नृसिंह भगवान ।
 काली को अवतार, श्री कृष्णचन्द्र को जान ॥ ४९ ॥
 मातु षोडशी को विदित, परशुराम अवतार ।
 भुवनेशी जगदंब को, वामनह्रिय मै धारा ॥ ५० ॥
 तारा को अवतार, श्रीरामचन्द्र रघुराज ।
 मातंगी अवतार हैं, वौध सुखद शिर ताज ॥ ५१ ॥
 श्री वगला अवतार, शुभ प्रगट मच्छभगवान ।
 धूमावति अवतार जग कलकी रूप बखान ॥ ५२ ॥
 छिन्न मस्तका मातु को, है कूष्म अवतार ।
 मातु भैरवी को विदित, श्री वाराह उदार ॥ ५३ ॥
 माया के अवतार यह, दशौ बखानत वेद ।
 आदि शक्ति अवतार लै, हरति सुरन को खेद ॥ ५४ ॥

जग मैं जे अवतार है, सहित रूप साकार ।
 ते सबके बल जानिये, माया शक्ति विकार ॥५५॥
 देवासुर संग्राम पुनि, वृत्रासुर वध आदि ।
 लीला माया की सकल, अपर कथा सब वादि ॥५६॥
 हरिहरादि के विविध विधि, जे नाना अवतार ।
 आदि शक्ति के चरित, सब निश्चय मन में धार ॥५७॥
 गो गोचर जो जगत में, जहँ लगि मन बुधि दौर ॥
 तहँ लगि सब माया लखहु, प्रगट वस्तु नहि और ॥५८॥
 ब्रह्म शुद्ध अद्वै अचल, जानु शक्ति अस्थान ॥
 तासु आधार सदा रहति, माया प्रकृति प्रधान ॥५९॥
 देह माँहि जिमि प्राण है, रवि के माँहि प्रकास ।
 निगुन ब्रह्म मैं है, तथा निगुना शक्ति निवास ॥६०॥
 जथा चन्द्र मैं चन्द्रिका दाह अनल के माँहि ।
 तथा ब्रह्म मैं जानिये, माया शक्ति सदाहि ॥६१॥
 जथा जीव विनुदेह है, मृतक अशक्त विभात ।
 तथा शक्ति विनु शिव सदा, जडके सदृश लखात ।
 सकल प्रतिष्ठा ईशता, जानु शक्ति आधीन ।

विधि हरिहर रजसम लखहु, निज निज शक्तिविही
 महतु वडाई जगत की, जानु शक्ति अनुसार ।
 जेती जामै शक्ति है, तेती महतु बिचार ॥६४॥
 शक्ति प्रताप प्रगट सदा को, करि सकै बखान ।
 शक्ति हीन पावै नही, काहू पै मनमान ॥६५॥
 शक्ति रचति जगको, सदा पालति शक्तिहि ताहि ।
 नाशति पुनि सोई सकल, महा प्रलय के माँहि ॥६६॥
 मूल प्रकृतिको चरित, सब यामै संशय नाहि ।
 निमित्त मात्र विधि ईश, हरि उत्पति तिथि लयम ॥
 विदित तीनगुन प्रकृतिके, सतरज तम भवपाश ।
 तेलाहि विधि हरिहर करहि, उत्पति पालन नाश ॥
 ब्रह्मादिकसुर चर अचर, जहँ लगि जीव जहान ।
 त्रिगुन फासमै सब फँसेउ, वेद पुरान बखान ॥६७॥
 जासु शक्ति लबलेशते, शक्तिमान सब होइ ।
 आदि शक्ति पर मात्मिका, जलधि किशोरी सोइ ॥
 ऐसी श्री जगदंबिका, जासु अनन्त प्रताप ।
 ताहि भजे विनु नहि मिटै, कलिमल कलुष कलाप ॥

बन्ध मुक्ति उद्धार गति, प्रकृति काज एलेखु ।
 ब्रह्म अगुन अक्री सदा, अलख वेद कह देखु ॥७२॥
 प्रकृति बिलास लखात जग, केवल मायारूप ।
 जथा रज्जु तम व्याज लहि, दशरत नाग सरूप ॥
 अस विचारि संसार महँ, जे जे चरित लखात ।
 मुख्य चरित जगदंब को, सो सब जानहु तात ॥७३॥
 जदापि जगत कारिनि, प्रकृति नहि आतम सो भेद ।
 विद्याज्ञान प्रकाश करि, हरति अविद्या खेद ॥७४॥
 जो विद्या शक्ती परा, परमातम सो जानु ।
 शक्ति भिन्न नहि ब्रह्मते, वेद पुरान बखानु ॥७५॥
 विद्या रूप विसारि वो, परम अविद्या मूल ।
 विद्या शक्ति भजे सदा, न शत त्रिविधि भवशूल ॥७६॥
 जैसे जीव विहीन तन, कौडीहू को नाहि ।
 तैसे शक्ति विहीन, सुर असुर समस्त लखाहि ॥७७॥
 जीवन हित जिमि मीन को, केवल जल अवलंब ।
 प्राण धार प्रपंच को, तैसे श्री जगदंब ॥७८॥
 शक्ति हीन शिवशव, विदित सकल शास्त्रके माँहि ॥

अपर जीव जो शक्ति विनु, कौनै लेखे माँहि ॥८०॥
 मुकुता मिलै न सिन्धु विनु, कूप सरोवर माँहि ।
 मुक्ति जलधि तनया बिना, मिलै अपर कहुं नाहि ॥
 चंद सहोदरि के भजे, भव को ताप नसाइ ।
 जैसे गंग तरंग ते, पातक जाँहि विलाइ ॥८१॥
 लहे कलपतरु के जथा, दीन रहै नाहि कोय ।
 भजे रमापद पदुमके निति, सुख संपति होय ॥८२॥
 खान पान रस भोग सब, जानिहि सूकर स्वान ।
 मानुष तनको फल यही, लहहु शक्ति विज्ञान ॥८३॥
 काशी या संसार मै, दुर्लभ मानुष देह ।
 ताहि लहे कीजै अवसि, श्रीपद माँहि सनेह ॥८४॥
 भजिये त्रिभुवन मातु को कीजै नाहि विलंब ।
 कौट को भवफाँस को, विनु कमला जगदंब ॥८५॥
 जग महँ वाल अजान को, पालति के बलमाय ।
 अस विचारि आनहि भजे को जगदंब विहाय ॥८६॥
 परिहरि सिन्धु किशोरि पद, नहि पूरै मन आस ।
 विनु मुर सरिता, किमि नसै चोटें ओस पियास ॥८७॥
 शशि सो दरिमुख चन्द्रलखि, चित चकोर हरखात

पावत परमानन्द को, सब दुख ताप नसात॥८९॥
 मन कमला पद कमल, माधि चंचरीक जव होय।
 लहै परम विज्ञान मधु, सब दुख डारै खोय॥९०॥
 विश्वमातु हरि घरनि को, सब जन पुत्र समान ।
 हौंऊ पुत्र सुपुत्र पुनि, अपर कुपुत्रहि जान॥९१॥
 सो सुपुत्र संसार महुँ, जिनहि विमल विज्ञान ।
 पुनि कुपुत्र ते प्रगट जग, पापी अधम अजान॥९२॥
 तासु कुपुत्र अजान की गति, केवल जगदंब ।
 मातु दयाविनु नहि तिनहि, अपर कहूँ अवलंब॥९३॥
 सहाति कुचाल कुपुत्र कर, सब विधि केवल माय ।
 छमाधारि रखै दया, पालति छीर पियाय॥९४॥
 ऐसी जग जननी, रमा सिंधु किशोरि विहाइ ।
 भजहि अपर सुख हेतु, ते नर रहे भुलाइ॥९५॥
 कवहुँ कुमाता होति नहि, होहि कुपुत्र अनेक ।
 गखाति दया कुपुत्रपै अधिक जानि अविवेक॥९६॥
 कलिकल मष तम नाशकर भजहु रमापद भानु ।
 हित जगदंबा के विना और न काहू जानु॥९७॥
 कमला बदन सगेज छवि, मोमन भधुप समान ।

करिहै कवाहिय सरविमल मधुर माधुरी पान॥१८॥
 कबधों लखि घन श्याम, छवि रमा दामिनी संग ।
 प्रमुदितहै मोर मन गहि हिय परम उमंग ॥१९॥
 हृदय सरोवर माँहि कव, प्रीति वसंतहि पाइ ।
 श्रीपद पंकज फूलिहै, जाते सुख सर साइ॥१००॥
 हरि प्यारी छवि भानु, कवाहिय अकाशके माँहि ।
 उहित होयगो जासु दुति, पातक पुंज न साँहि॥१०१॥
 एक भरोसो मोहि पुनि, एक आश विस्वास ।
 परि हरि सब सुखको, भयों एक रमाको दास॥१०२॥
 चात्रिक की गहिरहनिको, तजि सर सागर कूप ।
 काशी चात्रिक निति भजत रमास्वाति घन रूप॥१०३॥
 छीर समुद्र किशोरि छवि, स्वाती जल दसमान ।
 चित चात्रिक जाचत सदा, त्यागि सबै जल आन॥
 जैसे चात्रिक स्वाति विनु, पियत वारि नहि अन्य ।
 तैसे श्रीपद कमल मै, धारिये प्रीति अनन्य॥१०४॥
 स्वातिहिते चातक करत, दिन दिन सहज सनेह ।
 मुरै न चातक साहसी, पाहन वरसे मेह ॥१०५॥
 प्रीति रीतिवर सीखिये, चतुर चातकै पाँहि ।

स्वाति हेतु दुख को सहत, पियत आन जल नाँहि ।
 तैसी भक्ति अनन्य को, रीति समुझि मन माँहि ।
 बुध जन मन वच काय सो देवी भजहि सहाहि ॥
 रटौ नाम जगदंब को, गावहु शक्ति चरित्र ।
 जग मैं शक्ति समान तब, दूजो अहे न मित्र ॥१०१॥
 सेवति निजपति को सदा जिमि पतिवर्ता वाम ।
 तैसे जगदंबा भजहु औरन सो नहि काम ॥११०॥
 तारी अधम अनेक को श्रमनहि कबहुँ तोहि
 जानि परैगो हरि प्रिया, जब तारैगी मोहि ॥१११॥
 जैसी है खलतारिनी, छीर समुद्र कुमारि ।
 तै सोई खल अधम मैं, हियमै समुझ विचारि ॥११२॥
 जेते जगमै पातकी कुमाति कुचाल अपार ।
 साधन हीन मलीन मन, मैं तिनमह सरदार ॥११३॥
 जदपि अहाँ सदगुन रहित, तदपि नहि अपसोस ।
 अवसि दया करिहै रमा, जाको मोहि भरोस ॥११४॥
 जौ नहि त्यागै सिन्धु, जा पतित उधार-नि वान ।
 मैं नहि तजौ कुचाल, निज कछुक नया मै हानि ॥११५॥
 अधम नहीं जग मोहि, सम तदपिहिये परतीति ।

अवसि तारिहैं इंदिरा समुझि आपनी रीति ॥११६॥
 जदपि सकल गुनहीन हौ, रटुँ रमा को नाम ।
 हरि प्यारी के दाश को, सिद्ध हौंहि सब काम ११७
 सब घट व्यापी जगत महँ, आदि शक्ति जगमातु ।
 दृष्टि दोष दरशै नही, ज्ञानदृष्टि दरसात ॥११८॥
 जल बियोग नहि सहि सकाहि बुद्धीहीन जे मीन ।
 नर चेतन कैसे जियै, अति मध्यान बिहीन ॥११९॥
 आत्मरूपिनी जलाधिजा कमला त्रिभुवन मातु ।
 सुमिरि ग्रंथ पूरन करेउ, जासु चरित विख्यातु ॥१२०॥
 बिरंची भक्ति तरंगिनी दोहा इक शत वीश ।
 जन काशी परसाद यह, सुमिरि रमा जगदीस १२१
 जगदंवा पद प्रीति हित, सरिता अति कमनीय ।
 यामै जो मज्जन करै, होइ भक्त गननीय ॥१२२॥
 अरथ सुधाके पान ते, नाशै मनको ताप ।
 लहै परम आनन्द को, मैटै पाप कलाप ॥१२३॥
 इति श्रीदेवा भक्ति तरंगिनि समाप्तम् ॥

आधिक आश्विन कृष्ण अमावस्यायां रवि वासरे सम्भवत् १९१७

* श्रीगणेशायनमः *

श्रीहरिवल्लभायै नमः ॥

अथ महालक्ष्म्यानवरत्नं लिख्यते ।

यामायापरमावराभयकरा याविष्णुवक्षस्थिता
याब्रह्मादिसमस्तदेवनमिता याश्वेतपद्मासना या-
सृष्टिस्थितिनाशकारणपराविद्याजगत्तारिणी पा-
यात्साह्रिवल्लभा भगवतीवैकुण्ठधामेश्वरी ॥ १ ॥
याश्रीक्षीरसमुद्रराजतनयानारायणप्रेयसी यायोगी-
न्द्रसुरेन्द्रसेव्यचरणासौवर्णवर्णाचया यामहिषासुर-
मर्दिनीगिरिसुतावाग्देवताशांकरी पायात्साह्रिव-
ल्लभाभगवतीवैकुण्ठधामेश्वरी ॥ २ ॥ या पद्मा परदे-
वता जलधि जा पद्मातया पद्मिनी पद्माक्षी पय-
सिन्धुजाचविमला श्रीपद्मनाभप्रिया याशरणाग-
तवत्सलाकलिमलप्रध्वंसिनीचिन्दिरा पायात्साह-
रिवल्लभाभगवतीवैकुण्ठधामेश्वरी ॥ ३ ॥ यामाताक-
मलोद्भवस्यजननी यासिद्धिलक्ष्मीस्मृता याब्रह्मा-

व्युतशंकरादिविवुधैः संसेव्यमाना परा या विद्या दश-
 धा धृतानि जवपुलीलार्थ विश्वोदरे पायात्सा हरिवल्ल-
 भा भगवती वैकुण्ठधामेश्वरी ॥ ४ ॥ या काली त्रिपुरांभि-
 धा चकमलायाँ छिन्नमस्ता शिवा या ताँ रावगलाँ मुखी
 च भुवनाया भैरवी रूपिणी या धूर्मावति देवि धूम्रवर्णा
 माँतंगकन्या च या पायात्सा हरिवल्लभा भगवती वैकुं-
 धामेश्वरी ॥ ५ ॥ या भंडासुरनाशिनी जलधिजा-
 शुभादि संघातिनी या दुर्गा सुरभंजनी सुरनुता शा-
 कंभरी भ्रामरी या चंडी कैटभमोहिनी सुरहिता धूम्रक्ष-
 णोत्पाटिनी पायात्सा हरिवल्लभा भगवती वैकुण्ठधामे-
 श्वरी ॥ ६ ॥ या सीता दशमौलि दर्पदलिनी रामप्री-
 या भूमिजा या त्रैलोक्यकुण्डुविनी सरसिजा या सि-
 न्धुकन्यारमा या भृगुनांदिनी सिद्धिदा धरणिजा या-
 रुक्मिणी राधिका पायात्सा हरिवल्लभा भगवती वैकुण्ठ-
 धामेश्वरी ॥ ७ ॥ या शक्तिप्रकटीकरोति भुवनं या पा-
 तिविश्वं सदा या संहारकरी समस्तजगतां या ब्रह्मवि-

द्यास्मृता आद्याज्योतिनमापहापरतरा याब्रह्मरूपा-
 शिवा पायात्साह्रिवलभाभगवतीवैकुण्ठधामेश्वरी
 ॥ ८ ॥ यास्वाहासुरतृप्तिदात्रविदितायज्ञेचयादक्षि-
 णा या श्रीं लुष्टि च पुष्टि ऋद्धिनिलयाशांतिश्च
 शांतिश्च यापितृणांवरतृप्तिकारणस्वधायाकाशिका-
 मुक्तिदा पायात्साह्रिवलभाभगवतीवैकुण्ठधामेश्वरी
 ॥ ९ ॥ नवरत्नंमहालक्ष्म्यानित्यंयेहिपठेन्नरः प्रा-
 प्नोतिविपुलान्कामान्महामायाप्रसादतः ॥

इति श्रीमहालक्ष्मीनवरत्नं समाप्तम् ॥



SPS

294.543 K 13 D



10309

* श्रीगणेशायनमः *

नमस्तेरमेसिन्धुकन्येनमस्ते जगत्कारिणीभ्रा-
 मरीत्राहिमातः नमस्तेशिवेसच्चिदानन्दरूपेनमस्ते-
 जगद्व्यापिणीत्राहिपद्मे ॥ १ ॥ नमोसुन्दरीकलेश-
 नाशायप्रौढे नमोतत्त्वहेमप्रभेस्तनगर्भे नमोविश्वमा-
 तर्महाविष्णुजाये नमस्तेजगत्पालिनीत्राहिपद्मे
 ॥ २ ॥ नमस्तेजगत्मोहिनीस्वर्गदात्रि नमस्तेमहै-
 श्वर्जदेकामधेनु नमश्चार्थसिद्धिप्रदेमुक्तिहेतुः नम-
 स्तेजगत्कारिणीत्राहिपद्मे ॥ ३ ॥ नमस्तेशरण्येप-
 परब्रह्मरूपेभ्यरूपेप्रपञ्चस्वरूपेप्यनूपे नमोनिर्गुणोवि-
 श्ववीजेनिरीहे नमस्तेभवोद्धारिणीत्राहिपद्मे ॥ ४ ॥
 नमस्तेसदाविष्णुवामांकसंस्थे नमस्तेवराभीतिह-
 स्तेहृदिस्थे सरोजासनेपद्महस्तेप्रसस्ते नमस्तेमनो-
 हारिणीत्राहिपद्मे ॥ ५ ॥

इति श्रीकमलापञ्चरत्न समाप्तः ॥

